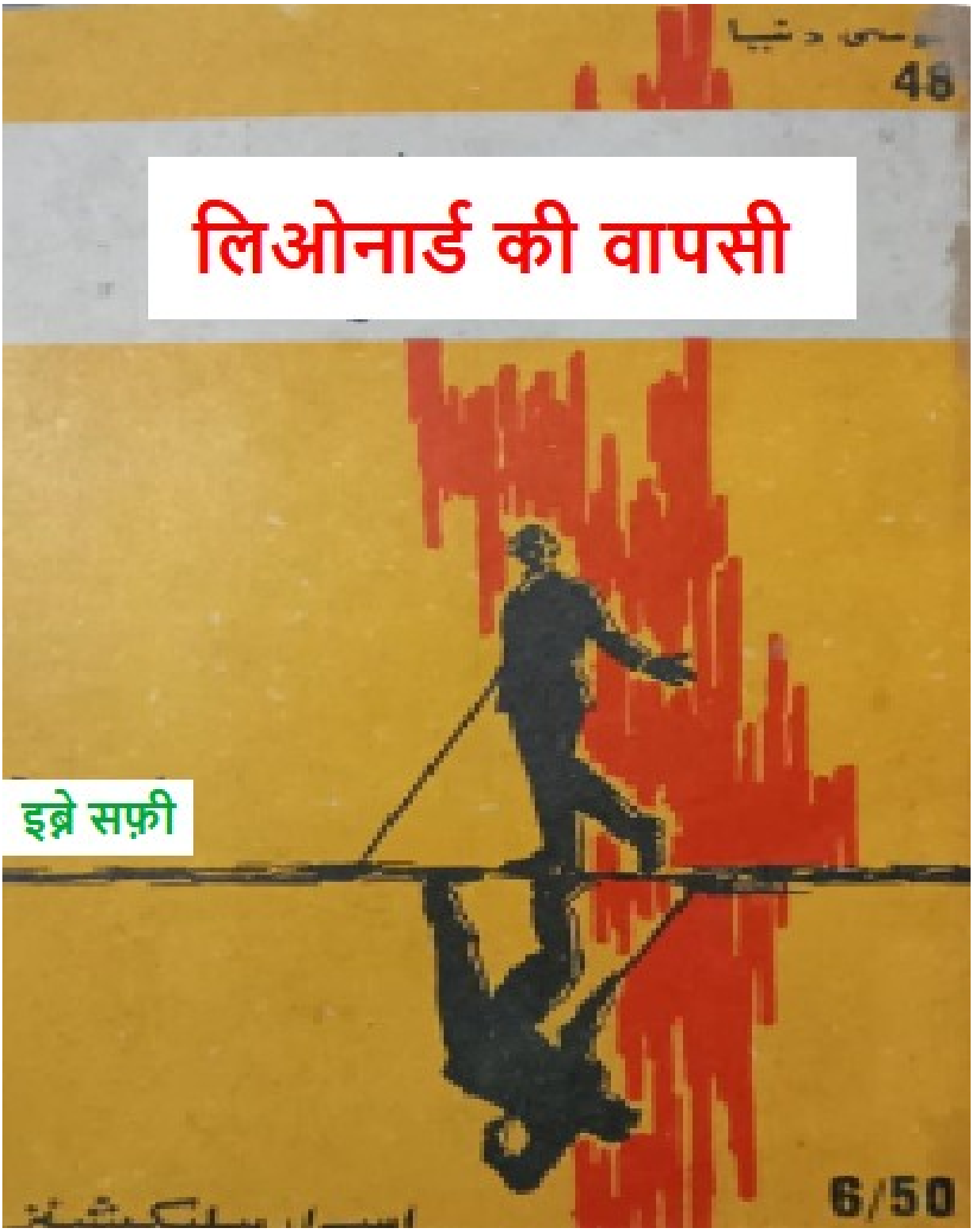
48
लिओनार्ड की वापसी
इब्ने सफ़ी
6/50

लिओनार्ड की वापसी

इब्रे सफ़ी

कार में खंजर

कैप्टन हमीद ने गहरी साँस ली और लेट गए। छत पूरी तरह सपाट थी । अगर वे इतनी सावधानी न बरतते, तो नीचे से दिखाई दे जाते। रात अँधेरी थी, लेकिन ज़मीन पर धूल नहीं थी। इसलिए दूर से दिखाई देने की संभावना थी।

वह कुछ पलों तक चुपचाप लेटा रहा। फिर उल्टा लेट गया और अपनी छाती के बल नीचे सरकने लगा। जब वह छत के किनारे पहुँचा, तो उसने नीचे देखा। आँगन अँधेरा था। लेकिन फर्श अभी भी दिखाई दे रहा था। छत फर्श से दस फुट से ज़्यादा ऊँची नहीं थी। फिर भी, उसे फर्श तक पहुँचने में कोई दिक्कत नहीं हुई।

और फिर उसके कदम एक कमरे की ओर बढ़ने लगे जिसकी खिड़कियाँ गहरी नीली रोशनी से जगमगा रही थीं। हमीद एक पल के लिए कमरे के सामने रुका, सोचता रहा। फिर उसने दरवाज़े पर हाथ रखा। दरवाज़ा अंदर से बंद नहीं था। उसने धीरे से दरवाज़ा खोला और बिना किसी हिचकिचाहट के अंदर घुस गया। गहरी नीली रोशनी में उसका चेहरा बहुत भयानक लग रहा था। घनी काली दाढ़ी और दाढ़ी के ऊपर किसी घर के शामियाने की तरह झुकी हुई मूंछें। उसके कपड़े भी किसी अमेरिकी अंदाज़ के गैंगस्टर जैसे थे।

उसने चारों ओर देखा और गहरी साँस ली।

सामने वाले पलंग पर एक जवान लड़की सो रही थी। हमीद दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा और चितकनी चढ़ा दी

फिर उसने जेब से रिवॉल्वर निकालकर दाहिने हाथ में थाम लिया और बाएँ हाथ से लड़की को हिलाने लगा। वह डर के मारे उठ बैठी... उसी समय, हमीद की उँगली उसके होंठों से हट गई और रिवॉल्वर लड़की की तरफ़ मुड़ गई। लड़की की आँखें चौड़ी हो गई थीं और उसके चेहरे पर कुछ ऐसे निशान दिखाई देने लगे थे।

मानो वह किसी लाश का चेहरा हो।

--यह रिवॉल्वर खामोश है, इसलिए इसे शोर पसंद नहीं। हमीद धीरे से बोला।

लड़की की हालत में कोई बदलाव नहीं आया।

हमीद ने पूछा, "तुम्हें इस घर में किसने रखा है?"

अचानक लड़की उठ बैठी और उसकी पलकें झपकने लगीं।

"तुम कौन हो? तुम क्या चाहते हो?..." लड़की ने बहादुर बनने की कोशिश की।

"मेरे सवाल का जवाब दो।"

और अगर मैं नहीं देती ..?

मैं अपनी जेब में रिवॉल्वर रखूंगा और तब तक तुम्हारा गला घोंटता रहूंगा जब तक तुम
"मेरे प्रश्न का उत्तर देने को तैयार न हो जाओ ।"

"क्या तुम यहाँ सिर्फ़ इसीलिए आए हो?" लड़की ने बेपरवाही से पूछा।

हाँ, समय बर्बाद मत करो.
"आप यह क्यों जानना चाहते हैं?"

"इसका मतलब यह है कि हम नहीं चाहते कि इस घर में कोई रह सके।"

"मैं समझ गई ।" लड़की के होठों पर एक हल्की मुस्कान उभरी।

" क्या समझीं ?"

"अर्थात् इस घर का उपयोग किसी अवैध गतिविधि के लिए किया जा रहा है।"

"लड़की, बकवास बंद करो। मैं जो पूछ रहा हूँ उसका जवाब दो।"

लड़की कुछ पल चुपचाप उसे देखती रही, फिर बोली, ", खुफिया विभाग का एक अधिकारी।"
कैप्टन हमीद को जानते हैं?

क्यों...! वह चौंक गया।

"उसने यह घर मेरे लिए किराये पर लिया है।"

"तुम झूठी हो।"

मैं बिल्कुल सही कह रही हूँ। अब तुम चुपके से यहाँ से निकल जाओ। तुम उन लोगों को

भलीभांति जानते होंगे.

314

"चुप रहो! तुम मुझे धोखा नहीं दे सकती । मैंने इस मामले में किसी मिस्टर असलम का नाम सुना है । बताओ.... वो असलम कौन है और कहाँ रहता है?"

"नाम... हाँ... घर इसी नाम से ख़रीदा गया है। लेकिन वो कैप्टन हमीद हैं और आप शायद अच्छी तरह जानते होंगे कि वो करनल फ़रीदी के घर में रहते हैं।"

मैं अच्छी तरह जानता हूँ।" हमीद ने गहरी साँस ली और एक कुर्सी खींचकर बैठ गया।

अगले ही पल वह अपने चेहरे से नकली दाढ़ी हटा रहा था।

और फिर लड़की के रूप में ज़बरदस्त बदलाव आया। उसका पूरा शरीर काँप रहा था और चेहरा लाल हो गया था।

अब बताओ हमीद ने उसे घूर कर देखा और कहा, "कर्नल फरीदी पर गोली किसने चलाई?"

लड़की कुछ नहीं बोली

हमीद कहता रहा, "तूने मुझे पहले नहीं बताया कि असलंम ही कैप्टन हमीद है। और अब... अब तेरी गर्दन पूरी तरह मेरी मुट्ठी में है। तू मुझे अभी और अभी बता कि गोली किसने चलाई?"

मुझें नहीं पता।"

बकवास... बताना तो पड़ेगा ही। जब असलम को कैप्टन हमीद के नाम से जानते हो...
यह तो तुम्हें भी पता होगा।"

"मुझे नहीं पता। जो चाहो करो।"

जो चाहूँ ! हमीद यह कहकर चुप हो गया।

लड़की उसे अजीब नज़रों से देख रही थी।

सच्ची बात तो यह है। --हमीद ने गहरी साँस लेकर कहा, "मुझे इस मामले में बिल्कुल दिलचस्पी नहीं है।"

"मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं बस किसी तरह तुम पर अपनी पकड़ बनाए रखना चाहता हूँ।"

"क्यों...?

"मुझे तुमसे .. " उसने अपनी बात पूरी होने से पहले ही शर्म से सिर झुका लिया।

लड़की कुछ नहीं बोली। हमीद उसकी तरफ़ नहीं देख रहा था।

" नहीं बताता । हमीद ने दाँतों तले उँगली दबा ली और रोने लगा।

मैं समझती हूँ । लड़की मुस्कुराई। "मत कहो, पर मेरा दिल!" उसने भी यही वाक्य कहा।

वाक्य पूरा नहीं किया ।

"ओह, तुम्हारे दिल में भी... तो मैं एक बड़ा उल्लू का पट्ठा हूँ।"

लड़की प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी ओर देखती रही।

हमीद ने कहा, "मुझे खेद है कि मैंने अनजाने में आपको परेशान किया।"

"मैं जानता हूँ कि आप कैप्टन हमीद हैं। इस घटना से पहले भी मैं आपको कई बार छुपकर देख चुकी हूँ। लेकिन आप बहुत बड़े आदमी हैं।"

लेकिन सवाल यह है कि आपने मुझे टोका क्यों नहीं ... आपने यह क्यों नहीं कहा कि आप असलम नहीं **बल्कि हमीद** हैं?

"लेकिन अगर मैंने ऐसा कहा होता, तो तुम मुझसे दूर हो जाते । मैं चाहती थी कि तुम मुझ पर शक करते रहो। उस स्थिति में, तुम मेरे करीब रह सकते थे। मैं तुम्हें लंबे समय से जानती हूँ।"

"तो कर्नल फ़रीदी पर हमला मेरे लिए एक ख़ुशी की घटना साबित हुई, हाहा, मैं खुश हूँ।"

"ऐसा मत कहो," लड़की बोली। "मुझे बहुत तकलीफ़ झेलनी पड़ी है। कोई मेरे फ़्लैट में घुस आया था।"मेरे फ़्लैट से आपके चीफ को गोली मारी गई थी। मैं वहाँ मौजूद थी । मैं खुद कहती हूँ कि गोली मेरे फ्लैट से चली थी। मैं यह भी मानती हूँ कि बाथरूम में एक खाली कारतूस मिला था, लेकिन मुझे नहीं पता कि वह कहाँ से आया। मैंने पहले कभी कारतूस का आकार भी नहीं देखा था। इसलिए मैं कह सकती हूँ कि गोली मेरे फ्लैट से चली थी। लेकिन मुझे अपराधी के अस्तित्व की जानकारी नहीं है। पुलिस कई दिनों तक मुझे परेशान करती रही, फिर आप हमदर्द बनकर आए और मुझे इस फ्लैट से इस घर में शिफ्ट कर दिया।

"और अब तुम हमेशा यहीं रहोगी ।"

"लेकिन पुलिस अभी भी मुझे ढूंढ रही होगी।"

रहने दो... जब तक मेरी सांस है, कोई कुछ नहीं कर पाएगा।

"नहीं, मुझे नहीं लगता कि यह सही है।"

"....क्यों

"इस तरह तो मेरे ख़िलाफ़ शक और भी गहरा हो जाएगा और फिर... इस गोपनीयता के कारण मुझे भी नुक़सान होगा। इसे तो मेरा काम तमाम ही समझो।"

तुम शायद टेलीफोन एक्सचेंज में थी।"

हाँ

316

"चिंता मत करो... सब ठीक हो जाएगा।"

"लेकिन आप उस समय इस रूप में क्यों आये थे?"

"बस यह जानने के लिए कि क्या तुम सचमुच मेरे असलीयत को जानती हो या नहीं।

"मैं समझी ! अगर मैं जानती , तो इसका मतलब है कि मैं अपराधी के साथ मिली हुई हूँ।"

यही तो मेरा भी ख़याल था, पर अब सच्चाई मेरे सामने आ गई है और मुझे शर्म आ रही है।

"यह तो ठीक है... पर पुलिस की नज़र में मेरी क्या हैसियत होगी?"

"मैं इस केस का इंचार्ज हूँ।" हमीद ने छाती थपथपाते हुए कहा। "क्या तुम्हें लगता है कि मैंने तुम्हें भगोड़ा घोषित कर दिया है... बिल्कुल नहीं... और क्या तुम्हें लगता है कि तुम्हारा काम खत्म हो गया है? बिल्कुल नहीं... मैंने तुम्हारे सम्मान में एक महीने की छुट्टी ले ली है।"

सच ? लड़की ने प्रसन्न होकर कहा ।

"तुम्हें यकीन नहीं आता?" हमीद का स्वर आश्चर्य से भरा था।

"मुझे यकीन है... लेकिन तुमने मेरे लिए इतनी परेशानी क्यों उठाई?"

"ऐसा मत पूछो...वरना मैं अपना पहला प्रश्न दोहरा दूंगा।"

लड़की ने कुछ नहीं कहा.

हमीद भी कुछ देर चुप रहा, फिर बोला, "ठीक है, अब तुम आराम कर सकती हो... अब तुम बिल्कुल आज़ाद हो। लेकिन ध्यान रहे कि तुम पिछले हफ़्ते से बीमार हो और अगले तीन हफ़्ते बीमार रहने के बाद काम पर लौटोगी । वह फ़्लैट वैसे भी तुम्हारे लिए ठीक नहीं था। तुम इस घर में आराम से रहोगी ..."

और इसी तरह आगे भी... आज, छोड़ो ... अब आराम करो।"

"हम फिर कब मिलेंगे?" लड़की ने प्यार भरे लहजे में कहा।

आह..... मेरा दिल तो चाहता है कि तुम्हें अपने कोट के कॉलर में लगा लूं और तुम हमेशा मेरे साथ रहो, लेकिन कल की शाम हम आर-लेकचून में बिताएंगे, वगैरह-वगैरह।

थोड़ी देर बाद हमीद वापस सड़क पर आ गया, लेकिन अब वह छिपता हुया नहीं जा रहा था। उसे दूसरी सड़क तक पहुँचने के लिए एक छोटी सी गली पार करनी थी।

317

कैडी लॉक अभी भी वहीं थी जहां उसने उसे छोड़ा था।

"अब मुझे किसी खैराती अस्पताल ले चलो।" हमीद कैडी के पास गया और धीरे से बोला। वह शायद किसी और से बात कर रहा था । लेकिन दूसरी तरफ से कोई जवाब नहीं आया। हमीद ने झुककर कैडी के अंदर देखा। लेकिन उसे फ़रीदी आगे की सीट पर नहीं दिखा। हालाँकि वह उसे स्टीयरिंग व्हील के पीछे बैठा छोड़ कर गया था।

इस समय जो कुछ भी हो रहा है वह फरीदी के इशारे पर हो रहा था !

एक हफ़्ते पहले, जब फ़रीदी एक कार्यक्रम में शामिल होने के लिए बार्कर स्ट्रीट स्थित एक इमारत में थे, तभी किसी ने उन पर गोली चला दी। गोली सामने वाली इमारत की एक खिड़की से चलाई गई थी। फ़रीदी बाल-बाल बच गए। बस एक फुट की दूरी से उनकी जान बच गई, वरना गोली खिड़की के फ्रेम की बजाय उनके माथे पर लगती। जिस फ्लैट से गोली चली, उसमें ग्लोरिया नाम की एक ईसाई लड़की रहती थी, लेकिन उसने घटना से अनजान होने का नाटक किया। वैसे, उसने बताया कि उसने कुछ देर पहले गोलियों की आवाज़ सुनी थी।

फ्लैट की तलाशी में बाथरूम में एक खाली कार्बाइन मिली, जिसे कुछ देर पहले ही खाली किया गया था। इसके बावजूद, लड़की ने ज़ोर देकर कहा कि उसे इसके बारे में कुछ नहीं पता। उसने गोलियों की आवाज़ भी सुनी थी और ऐसा लग रहा था कि वे आस-पास से आ रही हैं, लेकिन उसने इसे ज़्यादा महत्व नहीं दिया क्योंकि आस-पड़ोस के बच्चे अक्सर नकली अमेरिकी रिवॉल्वर से खेलते थे।

पुलिस उसे गिरफ़्तार करना चाहती थी, लेकिन फ़रीदी ने उसे ऐसा नहीं करने दिया। पुलिस दिन भर उसे परेशान करती रही। फिर शाम को वह हमीद असलम के नाम से उसके पास पहुँचा। उसने उससे हमदर्दी जताई और कहा कि वह उसे लंबे समय से जानता है और सचमुच उसकी मदद करना चाहता है।

वह लड़की, जो स्पष्ट रूप से परेशान लग रही थी, बिना किसी हिचकिचाहट के उसके साथ दूसरे घर चली गई। उसके बाद हमीद उससे नियमित रूप से मिलता रहा, लेकिन कैप्टन हमीद के रूप में नहीं। और आज, उस समय, उसने यह सब फ़रीदी के कहने पर किया। फ़रीदी उसके साथ इतनी दूर आया था और योजना के अनुसार, वह इसी रास्ते पर हमीद के लौटने का इंतज़ार करेगा।

लेकिन कैंडी लॉक खाली थी .. हमीद ने जेब से टॉर्च निकाली।

लेकिन जैसे ही उसने टॉर्च जलाई, वह डर के मारे एक कदम पीछे हट गया और अगली सीट में एक खंजर घुसा हुया था

सीट पर कई स्थानों पर खून के छोटे-छोटे धब्बे दिखाई दे रहे थे।

इसके अलावा कुछ ऐसे संकेत भी मिले जिनसे स्पष्ट रूप से पता चला कि वाहन के अंदर दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच संघर्ष हुआ था।

लेकिन हमीद उलझन में था। दोनों झगड़ों में से कोई एक तो बहुत आराम से चला गया होगा, वरना हमीद को गाड़ी का दरवाज़ा बंद नहीं मिलता।

टॉर्च की रोशनी कार के पास ज़मीन पर रेंगने लगी। लेकिन हमीद को यहाँ कोई निशान नहीं मिला, यहाँ तक कि उसे यह भी नहीं पता था कि बाहर निकलने के लिए कौन सा दरवाज़ा इस्तेमाल किया गया होगा।

सेट के अलावा कहीं और खून के धब्बे भी नहीं पाए गए।

यह बहुत अजीब था। फ़रीदी कहाँ गया? क्या उसके अनजान दुश्मनों ने उसे पकड़ लिया था, लेकिन खंजर की मौजूदगी इस बात का खंडन करती थी। जो लोग जानलेवा हमला कर सकते हैं, उन्हें किसी को पकड़ने की क्या ज़रूरत हो सकती है?

तो इसका मतलब यह हुआ कि हमलावर अपने लक्ष्य में सफल नहीं हुए।

वह काफ़ी देर तक वहीं खड़ा रहा, इधर-उधर देखता रहा। सवाल यह था कि रुके या जाए। फ़रीदी की चिंता अपनी जगह थी, लेकिन समय भी एक अहम पहलू था, और अगर फ़रीदी ने ही कार का दरवाज़ा बंद किया था, तो इसका मतलब था कि वह पूरी तरह ठीक था । अगर वह हमलावरों को भगाकर गया था, तो हमीद ने यहाँ उसका इंतज़ार करके मूर्खता ही करनी थी।

और अगर हमलावर उसे पकड़ लेते, तो कार का दरवाज़ा बंद करना मनोवैज्ञानिक रूप से असहज होता। हालाँकि, हमीद ने यह भी तय कर लिया था कि फ़रीदी सुरक्षित है। फ़रीदी का इस तरह गायब हो जाना कोई नई बात नहीं थी। समय के साथ जो भी मन में आता, वह कर लेता।

हमीद कैडी में बैठ गया। तभी उसे ख़याल आया कि वो ग़लती कर रहा है। क्यों न कैडी को इन सारे निशानों के साथ यहीं छोड़ दिया जाए, और ख़ून के धब्बे तो वैसे भी सुरक्षित थे क्योंकि वो सूख चुके थे।

वह चुपचाप कैडी से बाहर निकला और उसका एक दरवाज़ा खुला छोड़कर पैदल ही चल पड़ा। आज का अभियान सुखद और अप्रिय दोनों साबित हुआ था।

वह सोच रहा था कि क्या ग्लोरिया का उस व्यक्ति से कोई संबंध है जिसने वास्तव में फरीदी को गोली मारी थी।

319

जरोर होगा , अन्यथा वह उसे उसी क्षण डांट देती जब उसने उसे बताया कि उसका नाम असलम है, और उसके बाद भी, वह उससे मिलती रही, और उस दौरान, उसने कभी यह प्रकट नहीं होने दिया कि वह उसकी असली पहचान जानती है।

केस बैग

हमीद को उम्मीद थी कि फ़रीदी घर पर मिलेंगे, लेकिन वो वहाँ भी नहीं था। हमीद चुपचाप अपने कमरे में चला गया। दो बज रहे थे और उसका दिमाग़ नींद से भारी था।

फिर उसे पता ही नहीं चला कि वह कब सो गया।

और जब ठीक एक घंटे बाद उसने अपनी आँखें खोलीं, तो उसे आश्चर्य हुआ कि उसने आँखें क्यों खोलीं।

उसने मेज़ पर रखे समय पर नज़र डाली। सवा तीन बज रहे थे, और तभी उसे अचानक एहसास हुआ कि उसने आँखें क्यों खोली थीं। कोई उसके कमरे का दरवाज़ा खटखटा रहा था।

हमीद हड़बड़ाकर उठ बैठा। पर सोचने लगा कि यह फ़रीदी तो नहीं हो सकता। क्योंकि फ़रीदी ऐसे मौकों पर अपने कमरे में टेलीफ़ोन का बजर बजाता था, और नौकर में इतनी हिम्मत नहीं थी कि उसके कमरे का दरवाज़ा ऐसे पीट सके ।

उसने झुंझलाकर दरवाज़ा खोला। थाने का इंचार्ज इंस्पेक्टर जगदीश खड़ा होकर आँखें झपका रहा था।

“तुम ठीक तो हो न?” हमीद ने पूछा,

“तुम यहाँ कैसे पहुँचे?”

“फरीदी साहब कहाँ हैं?” जगदीश ने पूछा।

यार, तुम आदमी हो या...?

" हमीद साहब , आप स्थिति की गंभीरता से अवगत नहीं हैं।"

आपका क्या मतलब है...!"

"दोपहर दो बजे एक कांस्टेबल को शेरमार रोड पर फरीदी साहब की कार मिली, जिसकी आगे की सीट पर एक लाश पड़ी थी और खून की कुछ बूँदें थीं।"

"तुमने भी ऐसा ही कुछ सपना देखा होगा। कार गैराज में है और फ़रीदी साहब अपने कमरे में सो रहे होंगे।"

नहीं, कैडी गैराज में नहीं है और फ़रीदी साहब भी अपने कमरे में नहीं हैं।

"तब चिंता की बात है। पर क्या तुम्हें पूरा यकीन है कि गाड़ी उनकी ही है।"

आपको पता होना चाहिए कि मैं पूरी जाँच-पड़ताल करके आया हूँ।" उसने संक्षेप में कहा , हमीद मन ही मन खुद को कोसता हुआ जगदीश के साथ शर्मा रोड की तरफ़ चल पड़ा।

मामला बहुत बढ़ चुका था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करे।

हालाँकि, उन्होंने लोगों के सवालों का जवाब घुमा-फिराकर देना जारी रखा।

सुबह तक हालात बदल चुके थे। ऑफिस के रजिस्टर से पता चला कि फ़रीदी चार दिन से शहर में नहीं आया था। हमीद को इसकी कोई खबर नहीं थी, और होती भी कैसे, क्योंकि फ़रीदी पिछली रात तक उसके साथ ही था।

उसने हमीद को यह नहीं बताया था कि वह उस दिन ऑफिस में होगा।

हालाँकि, अब वह सोच रहा था कि क्या पिछली रात पुलिस से बातचीत में उसने कुछ ऐसा कहा था जो डायरी से मेल न खाता हो। उसे कुछ भी याद नहीं था। वह खुद भी उनसे खुलकर बात नहीं कर रहा था।

शाम के अख़बारों के हॉकरों ने आसमान को सिर पर उठा लिया।

"""""दिन की सबसे सनसनीखेज ख़बर""""

फ़रीदी का गायब होना थी। लगभग सभी अख़बारों ने पिछले हफ़्ते हुए हमले का भी ज़िक्र किया।

लेकिन हमीद ने यह जरूर देखा कि सभी अखबारों ने इस संबंध में अटकलें लगाने से परहेज किया था।

*

उस शाम, हमीद ग्लोरिया के साथ आरलेकचून के एक पारिवारिक केबिन में बैठकर झक मार रहा था। जब आप बिना सोचे-समझे किसी गतिविधि में शामिल होते हैं, तो उसे झक मारना ही कहेंगे।

इस की वजह ख़ुद ग्लोरिया थी। वह ख़ूबसूरत ज़रूर थी, लेकिन बातचीत के दौरान वह अक्सर अपने होंठ भींच लेती थी मानो छींक रोकने की कोशिश कर रही हो। उसकी यह आदत हमीद के सौंदर्यबोध के लिए घातक साबित हुई। औरतों के बारे में उसकी भावनाएँ लॉर्ड बायरन जैसी थीं।

ये किसी भी तरह से सबसे अजीब भावनाओं से कम नहीं थे।

वह खीझते हुए भी से सब सहन कर रहा था। फरीदी ने उसे खास तौर पर ग्लोरिया पर नज़र रखने का निर्देश दिया था।

"तुम क्या सोच रहे हो...?" ग्लोरिया ने पूछा.

"क्या आपने कोई शाम का अखबार देखा है?"

"मैं हमेशा सुबह का अखबार देखती हूं।"

"कर्नल फ़रीदी की कार कल रात शर्मा रोड पर मिली। आगे की सीट के पीछे एक खंजर फंसी हुई मिली और कुछ खून के धब्बे भी मिले।"

"ओ ह...तो किसी ने हमला किया। लेकिन कर्नल कहाँ है?"

कर्नल! हमीद ने गहरी साँस ली और कहा, "मुझे उम्मीद है कि आज शाम तक उसकी लाश किसी नदी या नाले में मिल जाएगी।"

"नहीं..." ग्लोरिया ने कहा, उसकी आँखें आश्चर्य और भय से फैल गयीं।

हाँ... और अब मुझे अपनी जान भी ख़तरे में नज़र आ रही है।" हमीद धीरे से बोला।

तुम यहाँ बहुत आराम से बैठे हो ?। ग्लोरिया के स्वर में आश्चर्य था।

हमीद ने गंभीरता से कहा, "मुझे मरने में अधिक लाभ नजर आता है।"

मुझे समझ नहीं आ रहा तुम क्या कह रहे हो। चलो, उठो... मैं यहाँ नहीं बैठूँगी ।

"क्यों...?"

"यहां आप पर बहुत आसानी से हमला हो सकता है।"

"चिंता मत करो! मैं कायर नहीं हूं।"

"तो फिर तुम्हारे चेहरे पर हवाइयां क्यों उड़ रही हैं?"

"मक्खोंयाँ होंगी ," हमीद ने बेपरवाही से कहा।

नहीं, आज तुम्हारा रवैया बहुत बदल गया है। क्या तुम्हें यकीन नहीं हो गया कि मेरा ... हमलावर से कोई लेना-देना नहीं है।"

" यह कहानी ख़त्म करो! मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।"

"तो फिर तुम क्या सोच रहे हो?"

"कुछ नहीं, मेरा मूड बहुत खराब है। चलो चलें।" हमीद उठ खड़ा हुआ।

322

ठीक दस बजे, हमीद सोने की तैयारी कर रहा था कि डीआईजी का फ़ोन आया। उन्होंने उसे उसी वक़्त अपने बंगले पर बुलाया था।

वह हमेशा अपने वरिष्ठ अधिकारियों के सामने अकेले जाने से डरता था। वह डीआईजी से दर्जनों बार मिल चुका था, लेकिन सिर्फ़ फ़रीदी के साथ।

लेकिन अब वह किसी भी कीमत पर वहां पहुंचना था ।

उसने ऑस्टिन को गैराज से बाहर निकाला और दिल ही दिल में अपना सिर पीटता हुया वह डी आईजी के बंगले की ओर चल पड़ा। उसे लग रहा था कि उसे डी.आई. को फरीदी के बारे में बताना पड़ सकता है। वैसे, फरीदी को आदेश था कि वह किसी को न बताए, चाहे विभाग का कोई बड़ा अधिकारी ही क्यों न पूछे। वह गहरी उलझन में था। फरीदी ने ऑफिस डायरी में उसकी अनुपस्थिति दर्ज कर रखी थी। जिसका साफ़ मतलब था कि वह पिछले तीन दिनों की अपनी गतिविधियों का खुलासा नहीं करना चाहता था।

हमीद की उलझन बढ़ती ही जा रही थी और जब कार डीआईजी के बंगले के परिसर में प्रवेश कर रही थी तो यह और भी बढ़ गई।

डीआईजी तक पहुँचने के लिए उसे किसी "औपचारिकता" से नहीं गुज़रना पड़ा। एक आदमी बाहर उसका इंतज़ार कर रहा था। वह उसे ड्राइंग रूम में ले गया।

डीआईजी अकेले नहीं थे। विभाग के अधीक्षक और डिपटी अधीक्षक भी मौजूद थे।
फ़रीदी के बारे में कुछ पता चला ? डीआईजी ने उन्हें बैठने का इशारा किया और कहा,

"नहीं... अभी तक कुछ पता नहीं चला है।"

"अच्छा, मैंने तुम्हें एक बहुत पुराने केस पर बात करने के लिए बुलाया था।"

हमीद का भ्रम दूर हो गया। फ़रीदी से बातचीत एक पुराने केस पर आकर खत्म हुई थी।

डी.आई.जी. ने कुछ क्षण तक उसकी ओर देखा और फिर कहा, "आप लियोनार्ड मामले में फ़रीदी के साथ थे, है न?"

"हमीद लियोनार्ड का नाम सुनकर हैरान रह गया। "हाँ... मैं उसके साथ था।"

"आप इस मामले से संबंधित कुछ जानकारी प्रदान करके मदद कर सकते हैं।"

"..... जानकारी ..... मगर ?

" बहुत पुरानी कहानी हो गई है?" डीआईजी ने सवालिया लहजे में पूछा। उनका मूड बहुत खराब लग रहा था।

"हाँ! अगर रिकॉर्डिंग रूम से...."

अगर केस बैग निकाल लिया गया तो...क्या तुमसे मैं खाक पूछूँगा?" डीआईजी ने वाक्य पूरा किया।

हमीद ने कोई जवाब नहीं दिया। डी. आई.जी. ने मेज़ पर मुक्का मारा और कहा, "सब सो रहे हैं। लिओनार्ड का केस बैग रेकॉर्डर से गायब है।"

सुना तो हमीद सन्नाटे में या गया ,
 डीआईजी चीखता रहा - समझ नहीं आ रहा कि लोग क्या कर रहे हैं।
फिर उन्होंने अधीक्षक की ओर देखा और पूछा, "रिकॉर्ड कीपर के ख़िलाफ़ कार्रवाई हो गई है।"

"उत्तर ....उत्तर मांगा गया है।"

"जवाब मांगा गया है। उन्हें और उनके स्टाफ़ को हिरासत में लिया जाना चाहिए था, महोदय।"
मुख्य निरीक्षक ने कुछ नहीं कहा।

डीआईजी फिर हमीद की ओर मुड़े
 "क्या तुम मुझे बता सकते हो कि लियोनार्ड ब्लैकमेल करने के लिए कौन-सा तरीका अपनाता था?"

"हाँ, मुझे मालूम है," हमीद ने अपने माथे से पसीना पोंछते हुए कहा।

एक अख़बार था, "द स्टार", जो यूरोप में ब्लैकमेलिंग के विभिन्न तरीकों पर लेखों की एक श्रृंखला प्रकाशित कर रहा था। इसमें उन पत्रों के उदाहरण दिए गए थे जिनका इस्तेमाल ब्लैकमेलर लोगों से पैसे ऐंठने के लिए करते थे।
लेकिन सच तो यह ही था कि लियोनार्ड अपने पीड़ितों से पत्रों के ज़रिए ही पैसे वसूलता था। स्टार के लिए लिखे गए वे लेख उसके ही एक आदमी ने लिखे थे।"

"क्या आपने आज सुबह का कोई अखबार देखा?"

"....जी हाँ

" लेडी प्रकाश के बारे में समाचार देखा।"

"नहीं! मेरे पास पूरा अखबार पढ़ने का समय नहीं था ।"

"देखिए," डीआईजी ने मेज पर रखे अखबार की ओर इशारा किया।

हमीद ने अख़बार उठाया। उसकी नज़र पहले पन्ने पर एक छोटी सी ख़बर के चारों ओर लाल पेंसिल से बने बॉर्डर पर पड़ चुकी थी।

समाचार यह था, "लेडी प्रकाश को कल शाम एक अजीब पत्र मिला। यह पत्र किसी गुमनाम व्यक्ति का है और इसकी विचित्र भाषा से पता चलता है कि लेखक मानसिक रूप से बीमार है।"

पत्र का विषय यह है

मेरी प्रिय लेडी प्रकाश!

टेम्स नदी में, जहाँ जहाज़ लंगर डालते हैं, मछलियाँ नहीं मिलतीं। अगर कोई सफ़ेद गुलाब दे, तो कैमरे का ध्यान जरूर रखना चाहिए । अल्लाह बहुत बड़ा कार साज है। मैंने सुना है कि कार साज़ी में हेनरी फ़ोर्ड का भी कोई जवाब नहीं। मैंने वियना में डेढ़ लाख में एक तस्वीर ख़रीदी थी।
टेम्स नदी की मछलियाँ तीन लाख माँगती हैं ।

हमीद ने खबर पढ़ी और वह आईजी की तरफ देखने लगा।

लेकिन लेडी को ऐसा ही कोई पत्र नही मिला , --डीआईजी ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा, " उसने आज इस समाचार एजेंसी के खिलाफ मानहानि का मुकदमा दायर कर दिया है।

तब तो समाचार एजेंसी ..

"समाचार एजेंसी के कर्मचारियों ने इस बारे में अपनी अनभिज्ञता व्यक्त की है। समाचार पत्र के संपादकों का कहना है कि उन्हें यह समाचार उसी एजेंसी के टेलीप्रिंटर से प्राप्त हुआ।"

लियोनार्ड... सौ प्रतिशत लियोनार्ड...! हमीद धीरे से बुदबुदाया।

"मुझे बताओ फ़रीदी कहाँ है?"

"मेरा विश्वास करो... मुझे नहीं पता।"

"उसने हमले के बारे में क्या बताया था ?"

"कुछ नहीं, वही पुरानी बात। शहर और पूरे देश के अपराधी उनके दुश्मन हैं।"

"लेकिन मैं निश्चितता के साथ कह सकता हूं कि यह वाक्य लियोनार्ड की ओर से आया था।"

डीआईजी ने कहा, "फ़रीदी ही वह व्यक्ति था जिसने सबसे पहले उस के लिए जाल बिछाए थे। पूरे यूरोप की पुलिस उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकी। क्या वह रिहा होने के बाद किसी ऐसे आदमी को छोड़ देगा जिसकी बदौलत उसे जीवन में पहली बार जेल देखना पड़ा।"

हाँ, मैं भी अब यही सोच रहा हूँ। लेकिन फ़रीदी साहब ने एक बार भी इसी दौरान

होनार्ड का नाम नहीं लिया।"

" इसी दौरान से तुम्हारा क्या मतलब है?" डी.आई.जी. ने उसे घूरते हुए पूछा।
"मतलब आज से चार दिन पहले की बात है।" हमीद फौरन संभल गया।

"क्या तुमने उसे तीन दिन से नहीं देखा?"

"नहीं।"

लेकिन उसकी कार।"

"वह चार दिन पहले कार अपने साथ ले गया था।"

"क्या तुम्हें यकीन है कि तुम झूठ नहीं बोल रहे हो?"

"मुझे तो लगता है फ़रीदी साहब में भी आप से झूठ बोलने की हिम्मत नहीं होगी।" हमीद ने मक्खन का डिब्बा आगे बढ़ाया।

लेकिन हमीद की बातों का उस पर कोई असर नहीं हुआ। ख़ुफ़िया विभाग का उप महानिरीक्षक इतना मूर्ख नहीं हो सकता।

उन्होंने एसपी और डीएसपी की ओर देखा और कहा, "आप लोग जा सकते हैं।" अब बताओ "

कल रात हम साथ में शर्मा रोड गए थे। मुझे वहाँ से दूसरी जगह जाना है।
प्रोग्राम तो ये था कि फ़रीदी शर्मा रोड पर मेरा इंतज़ार करेगा, लेकिन वापस लौटने पर मुझे वो गाड़ी उसी हालत में मिली जिसकी रिपोर्ट आपके पास पहुँची है। लेकिन नहीं... रिपोर्ट ये है कि उसका एक दरवाज़ा खुला मिला, हालाँकि सच ये है कि मुझे चारों दरवाज़े बंद मिले।

"इससे क्या फर्क पड़ता है।"

इसका महत्त्व यह है कि फ़रीदी साहब न सिर्फ़ ज़िंदा हैं, बल्कि जहाँ भी गए, आज़ादी से गए, वरना हमलावर को क्या थी कि वह कार का दरवाज़ा बंद करके निकलता ? मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से "

"बकवास... आप इसे मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं कहेंगे। लियोनार्ड जैसे अपराधी आसानी से हार नहीं मानते। मुझे लगता है कि फ़रीदी को यह बात समझ आ गई है।"

हमीद के मन में इस बेतुके विचार के विरुद्ध कई तर्क थे, लेकिन उसने विस्तार से बताना उचित नहीं समझा। उच्च अधिकारियों की आम मानसिकता यही होती है कि उन्हें अपने अधीनस्थों से मानसिक परामर्श करना चाहिए।

हार के बाद तो वे और भी अधिक भूल जाते हैं।

हमीद ने कहा, "यह भी संभव है।"

"लेकिन कल रात तुम कहाँ गये थे?"

हमीद नाराज़ हो गया और उसने ठान लिया कि अब वह सच नहीं बोलेगा। --सड़क के दूसरी तरफ, अल्बर्ट रोड पर, लाइन आर्ट प्रैस है । वहाँ हमें एक ऐसे आदमी से मिलना था जो नकली नोट छापने के जुर्म में सात साल जेल में रह चुका था।आज वह लाइन आर्ट प्रैस में मशीन मैन के रूप में काम कर रहे हैं।"

"तुमने इस आदमी की जाँच क्यों करनी थी ?"

"पता नहीं, फरीदी साहब मुझे अपनी चालों के बारे में कभी बताते ही नहीं।

"और ये छोटी-मोटी आदत उन्हें किसी न किसी मोड़ पर पछताएगी।"
हमीद कुछ नहीं बोला। उसे समझ नहीं आ रहा था कि इससे कैसे बचे। कुछ देर सन्नाटा रहा,

फिर डीआईजी ने कहा। "तुम जा सकते हो। लेकिन मुझे लियोनार्ड के पिछले केस के बारे में और भी जानकारी चाहिए। कल शाम तक जितनी याद आ रही हो, लिख लो और मुझे दे दो।"

लेडी परकाश

हमीद डीआईजी के यहाँ से एक अप्रिय स्वाद लिए लौटा था। रास्ते भर वह लियोनार्ड के बारे में ही सोचता रहा। लियोनार्ड यूरोप का एक अंतरराष्ट्रीय ब्लैकमेलर था, जिसकी अंतरराष्ट्रीय ख्याति थी और जिसे फरीदी ने पाँच साल पहले ज़ंजीरों में जकड़ दिया था। यह वही लियोनार्ड था जिसने सुपरिंटेंडेंट जैक्सन के रूप में लंबे समय तक खुफिया विभाग पर राज किया था, और सुपरिंटेंडेंट जैक्सन की जेल में सड़ रहा था।

लियोनार्ड ने ज़िंदगी में पहली बार फरीदी की वजह से जेल देखी थी। वह एक हत्यारा था। एक साज़िशकर्ता। एक ब्लैकमेलर, लेकिन लंदन पुलिस उसके खिलाफ एक भी हत्या का आरोप साबित नहीं कर पाई। उस पर मुकदमा चला और उसे आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। लेकिन वह तीन साल बाद जेल से भागने में कामयाब रहा।

फरीदी ने कुछ महीने पहले हमीद को उसके भागने के बारे में बताया था और यह भी चिंता व्यक्त की थी कि वह एक बार फिर पूर्व की ओर का रुख करेगा ।

और आज अखबार में लेडी प्रकाश के बारे में खबर देखकर उसे यकीन हो गया कि पिछले कुछ दिनों की घटनाओं में लियोनार्ड के अलावा और कोई शामिल नहीं हो सकता। पाँच साल पहले भी लियोनार्ड ने यहाँ के कुछ बड़े घरानों की औरतों को ब्लैकमेल करने के ऐसे ही अनोखे तरीके ईजाद किए थे।

पूरी यात्रा के दौरान हमीद विभिन्न विचारों से उलझन में रहा।

गेट खुला था और गार्ड उस भयावह सभा परिसर में गश्त लगा रहे थे। जैसे ही हमीद की गाड़ी अंदर आई, गार्ड ने गेट बंद कर दिया और अपने साथियों की ओर चल पड़ा।

हमीद कार को गैराज में रखकर वापस ला रहा था, तभी किसी ने गेट खटखटाया और किसी ने गेट पर आवाज लगाई।

हमीद सोचने लगा कि उस वक़्त वहाँ कौन होगा। बारह बज चुके थे। फिर वह गेट की तरफ़ बढ़ा।

वह जाने ही वाला था कि परछाईं में एक चीख़ के साथ एक आवाज़ गूँजी। यह एक औरत की थी। हमीद गेट की तरफ़ दौड़ा, लेकिन उसके पास पहुँचने से पहले ही कार तेज़ी से निकल गई। और अंधेरे में गायब हो गई।

हमीद ने चौकीदार को आवाज़ लगाई। उसके पास दरवाज़े के ताले की चाबी थी। चौकीदार ही नहीं, दो-तीन नौकर भी दौड़कर दरवाज़े की तरफ़ आए।

“जल्दी से गेट खोलो…” हमीद ने उदास स्वर में कहा।

गेट खुलते ही उसने टॉर्च जला दी। गेट से बस तीन कदम की दूरी पर एक आकृति मुँह के बल लेटी हुई थी, उसने चटक गुलाबी रंग की स्कर्ट पहन रखी थी। हमीद उसे सीधा करने के लिए झुका, और उसके मुँह से एक चौंकी हुई आवाज़ निकली... यह ग्लोरिया थी।

थोड़ी देर बाद, ग्लोरिया ड्राइंग रूम में सोफे पर बेहोश पड़ी थी और हमीद उसे होश में लाने की कोशिश कर रहा था।

उसका मन चीख की आवाज़ सुनकर उलझा हुआ था, लेकिन ग्लोरिया के शरीर पर कहीं भी कोई ज़ख्म नहीं था। हो सकता है कि उसका बेहोश होना डर का नतीजा हो।

आधे घंटे बाद, ग्लोरिया को होश आया और वह स्तब्ध होकर उठ बैठी। पहले तो वह डरी हुई आँखों से उसे घूरती रही।

328

वह इधर-उधर देखती रही, फिर खड़ी हो गई और पागलों की तरह अपने शरीर पर हाथ फेरने लगी।

"गोली नहीं लगी ?" हमीद ने उसकी हरकतों को ध्यान से देखते हुए धीरे से कहा। उसकी आवाज़ सुनकर ग्लोरिया ऐसे चौंकी मानो उसे उसकी मौजूदगी का एहसास ही न हुआ हो।

"ओह मेरे प्यारे कैप्टन।" वह उस पर झपटी और हमीद हिल भी न सका।

क्योंकि उस स्थिति में वह दीवार से टकरा जाती।

"मुझे बचाओ... मुझे बचाओ। वह उस छोटी चिड़िया की तरह हाँफ रही थी जो गलती से बाज़ के चंगुल से छूट गई हो।

"क्या बात है?" हमीद ने उसे एक तरफ धकेलते हुए कहा।

मुझे ख़तरा लग रहा है। वो मुझे मार डालेंगे। मैं अब तक तुम्हें धोखा दे रहाही थी । मुझे बचा लो... मैं तुम्हें सब कुछ बता दूँगी।

अहम... हमीद ने गहरी साँस ली और नौकरों के कमरे में लगी घंटियाँ दबाने के लिए खड़ा हो गया।

रुको... वह ग्लोरिया की ओर मुड़ा और बोला, "मैं अभी सुन रहा हूँ।"

दो मिनट के अंदर ही सारे नौकर हॉल में इकट्ठा हो गए। कुल आठ नौकर थे।

"जाओ... तुम लोग बाहर निकलो और परिसर में फैल जाओ। पीछे वाले पार्क का खास ध्यान रखना और अगर कोई परिसर में घुसने की कोशिश करे तो बिना किसी हिचकिचाहट के उसे गोली मार देना।"

फ़रीद के घर में नौकरों ने ऐसा हुक्म पहली बार सुना था। वे एक-दूसरे की तरफ़ देखने लगे।

और आँखें झपकाने लगे ।

"चलो...जल्दी करो।"

आप हमें कुछ नहीं बताओगे? फ़रीदी के ख़ास नौकर शरीफ़ ने पूछा।

"जो मैं कहता हूँ, वही करो।" हमीद ने सख़्त लहजे में कहा। आठ राइफलें निकालो... जाओ।"

सब चले गए... ग्लोरिया दरवाज़े पर खड़ी गहरी साँसें ले रही थी। हमीद उसकी तरफ़ मुड़ा और वे वापस ड्राइंग रूम में चले गए।

"हाँ, अब बताओ," हमीद बैठते हुए बोला।
"ख़तरा क्या है... तुमने राइफलें ..!"

छोड़ो भी... ये तो हमारा दिन-रात का खेल है... खैर, अब तुम जो भी कहोगे, मैं इस पर विश्वास नहीं करूंगा.

"तो फिर यह बताना बेकार है।"

"जैसी आपकी इच्छा," हमीद ने उदासीनता से कहा।

"भगवान के लिए, मैं पूरी तरह से अनजाने में एक षड्यंत्र का शिकार हो गई हूं।"

"अच्छा, अगर यही बात तुम अब कह रही हो , तो मुझे पहले बताने में क्या हर्ज था?"

"ओह...तुम समझ नहीं रहे हो। पहले तो मुझे भी नहीं पता था कि मैं भी मारी जाऊँगी।"

"क्या उस समय कोई तुम्हारा पीछा कर रहा था?"

बाहर हाँ.... मैं अरलेकचून से सीधा घर चली गयी । दूरी ज्यादा नहीं थी। इसलिए मैं चलने लगी। कुछ दूर चलने के बाद मुझे लगा कि कोई मेरा पीछा कर रहा है। ओह, कितना खतरनाक आदमी था। उसकी छवि अभी भी मेरे दिमाग में थी। उसकी आँखों में एक क्रूरता थी। वह सचमुच एक आदमखोर लग रहा था। मैं घर आईऔर मैंने खिड़की से बाहर देखा। वह बाहर दरवाजे की ओर देख रहा था। मेरी रूह काँप गई। ऐसा लग रहा था जैसे वह घर में आने के लिए किसी मौके की तलाश में था। फिर मैं बिना एक पल गंवाए दूसरे दरवाजे से निकल गई और लगभग टैक्सी स्टैंड की ओर भागी। लेकिन जब मैं टैक्सी में बैठी, मैंने पलट कर देखा और मेरी जान निकल गई क्योंकि वह भी एक टैक्सी के पास खड़ा था। मुझे पता था कि मुझे तुम्हारे पास ही शरण मिल सकती है। मैं यहाँ पहुँची और गेट खोलने की कोशिश कर रही ठी जब किसी ने मुझ पर गोली चला दी। फिर मुझे याद नहीं कि उसके बाद क्या हुआ।

"क्या गोली उसी टैक्सी से लगी जिसमें तुम आई थी?"

"मैं तुम्हें कुछ नहीं बता सकती। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि गोली किस तरफ से आई।"

"जिस टैक्सी में तुम आए थे, वह गोली लगते ही चल पड़ी थी।"

"गोली संभवतः उसी टैक्सी से आई होगी।"

"जब आप यहां आ रहे थे तब भी वह आदमी आपका पीछा कर रहा था।"

मुझे लगता है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि कुछ ही दूरी पर एक और टैक्सी चल रही थी।

तो दूसरी टैक्सी यहाँ आ गई।" हमीद ने पूछा:

"मुझे नहीं मालूम... मैं अपनी याददाश्त पर ज़ोर देकर भी नहीं बता सकती कि वह इतनी दूर तक आई थी या नहीं।"

"ठीक है...अब पुरानी कहानी पर वापस आते हैं।"

ग्लोरिया ने एक क्षण के लिए हमीद की ओर देखा और फिर कहा, "लेकिन तुमने तो पहले ही कहा था कि तुम इस पर विश्वास नहीं करोगे।"

"शुरू हो जाओ। अब मैं और अधिक मूर्ख नहीं बन सकता।"

ठीक है, तुम यकीन करो या न करो । अब मैं कुछ नहीं छिपाऊँगी। उस दिन मेरे फ्लैट के सामने वाली बिल्डिंग में एक समारोह था। एक फोटोग्राफर मेरे पास आया और मुझसे अनुरोध किया कि मैं उसे मेरे फ्लैट से समारोह की कुछ तस्वीरें लेने दूँ। उसने मुझे बताया था कि वह

एक स्थानीय अखबार का फोटोग्राफर है। डेली ऑब्जर्वर का फोटोग्राफर - मुझे इससे कोई दिक्कत नहीं थी। मैंने उसे इजाज़त दे दी। वह कुछ देर तक जगह चुनता रहा और आखिरकार उसे इस काम के लिए बाथरूम पसंद आ गया। उसका एक स्टॉल ठीक उस जगह के सामने था जहाँ मेहमानों का स्वागत हो रहा था। मैं उसे बाथरूम में छोड़कर अपने कमरे में चली गई । दरअसल, मैं उस दिन एक दिलचस्प उपन्यास पढ़ रही थी और उसे पूरा पढ़े बिना छोड़ना नहीं चाहती थी । कुछ देर बाद, मुझे कार की फायर की आवाज़ सुनाई दी, लेकिन मैंने उसे ज़्यादा तवज्जो नहीं दी क्योंकि मोहल्ले के बच्चे अक्सर नकली अमेरिकी पिस्तौल से खेलते थे, और कुछ तो इतने शरारती थे कि अक्सर हाथ उठाकर मेरी बालकनी पर फायर कर देते थे, और मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे कान के ठीक पास दो धमाके हुए हों। मुझे लगा कि ये किसी बच्चे की शरारत होगी और फिर मेरी आँखें तब खुलीं जब पुलिसवाले "फ्लैट में घुसे"। मैंने अनभिज्ञता का नाटक किया और सच तो ये है कि मुझे इसकी जानकारी तब तक नहीं थी जब तक बाथरूम में खाली कारतूस नहीं मिली। फ़ोटोग्राफ़र जा चुका था। मैंने जल्दबाज़ी में फ़ैसला किया कि मुझे अनभिज्ञता का नाटक करते रहना चाहिए, वरना मुझे इस फ़ोटोग्राफ़र को पेश करना पड़ेगा। मैंने पुलिस को बयान दिया कि मैं सो रही थी । इस दौरान कोई फ़्लैट में आया भी था या नहीं, मुझे नहीं पता क्योंकि मैं सोने से पहले फ़्लैट का दरवाज़ा बंद करना भूल गई थी । पुलिस मुझे हर तरह से धमकाती रही लेकिन मैं अपने पिछले बयान से ज़रा भी नहीं डिगी । फिर तुम असलम बनकर आए। मैं तुम्हें काफ़ी समय से जानती थी और मुझे ये भी पता था कि हमला फ़रीदी पर हुआ है। जब तुम असलम के रूप में आए तो मुझे समझ आ गया कि अब मुझे इस्तेमाल किया जा रहा है।

331

"मैंने सोचा था कि अगर मैं तुम्हें बता दूँ कि तुम कैप्टन हमीद हो, तो तुम्हारा शक और पुख्ता हो जाएगा। मैं चुप रही। लेकिन तुमने कल रात किसी और तरह से उगलवा लिया । मुझे किसी तरह तुम्हें यकीन दिलाना होगा कि मैं तुम्हें पहले से जानती थी। मैं तुम्हें बहुत गौर से देख रही थी। मैं तुम्हारी दोस्ती चाहती थी, लेकिन तुम अक्सर ऊँची जाति की औरतों के पक्ष में खड़ी होती

थीं। मैं एक गरीब लड़की थी, इसलिए कभी हिम्मत नहीं हुई, मुझे जो कहना था, कह दिया। तुम मेरे साथ जैसा चाहो वैसा करो। मैं तुम्हारे हाथों मरने को तैयार हूँ।"

हमीद चुपचाप उसे देखता रहा। जब उसकी कहानी खत्म हुई, तो उसने कहा, "अब मैं उस छोटी सी बात का इंतज़ार कर रहा हूँ जो तुम मुझे कल बताओगी।"

"जैसी आपकी मर्ज़ी।" ग्लोरिया मेयो ने उदास स्वर में कहा और आँखें बंद कर लीं। "अगर मैं आपकी कहानी पर यकीन करूँ, तो एक और सवाल उठता है।"

ग्लोरिया ने अपनी आँखें खोलकर बेदिली से कहा?

"कारतूस . एक राइफल. का था .. और राइफल ऐसी चीज नहीं है जिसे कोई फोटोग्राफर अपने कैमरे में छिपा सके।"

हाँ, ये सवाल उठता है। ग्लोरिया सिर हिला कर बोली --। उसके पास कैमरे के अलावा और कुछ नहीं था। लेकिन मैं अपने कमरे में थी। हो सकता है बाहर कोई और आदमी हो। लेकिन मैं पूछती हूँ, वो कारतूस बाथरूम में क्यों फेंका गया? क्या वो राइफल से खाली कारतूस निकाले बिना नहीं जा सकता था?

“अब तो तुमने खुद ही एक और मुसीबत खड़ी कर दी।” हमीद ने मुस्कुराते हुए कहा।

नहीं, खुद सोचो! इसका क्या मतलब है? क्या किसी आदमी ने जानबूझकर मुझे पुलिस बुलाया? "वह मुझे दुविधा में फंसाना चाहता है।"

"क्या तुम कोई खास हो ?"

"आप मेरे व्यक्तित्व के बारे में मुझसे अधिक जानते हैं।"

"तो फिर कोई तुम्हें क्यों फँसाना चाहेगा? क्या तुम्हारे जेल जाने से किसी को फ़ायदा हो सकता है? ऐसी किसी औरत का नाम बताओ जो तुम्हारी प्रतिद्वंद्वी हो।"

मैं ऐसे किसी आदमी को नहीं जानती , लेकिन मगर कारतूस .."

.. ". कारतूस जल्दी में पीछे छूट गई होगी । गण को शूटर छुपा कर ही फ्लैट में ले आया होगा।

332

और छुपा कर ही वापस ले लिया होगा। उसे छुपाने के लिए बट और नाल को अलग करना पड़ा होगा, इसलिए कारतूस गिर गया होगा ।"

"ओह - लेकिन मुझे यह बताओ कि उन्होंने तुम्हें क्यों मारा?"

"मैं क्या बताया सकता हूँ ?"

"आप उनसे परिचित नहीं हैं।"

निश्चित रूप से नहीं।"

"तो फिर हत्या का सवाल ही नहीं उठता।"

अरे बाप रे! मैंने ऐसी कई कहानियाँ पढ़ी हैं। वो ऐसे लोगों को मार देते हैं। जो उनकेकिसी आदमी का भी चेहरा देख लेते है?"

"…..मतलब ?"

जाहिर है, मैं इस फोटोग्राफर को उसी क्षण पहचान लूंगा जब मैं उसे दोबारा देखूंगा।

"आपने डेली ऑब्ज़र्वर का दफ़्तर ज़रूर देखा होगा।" हमीद ने उसकी आँखों में देखा।

"यह स्वाभाविक है... मैं निश्चित रूप से अपनी गर्दन बचाना चाहूंगी।"

"लेकिन वह वहां नहीं मिला।"

"मिल गया, लेकिन वह फोटोग्राफर नहीं है।"

"तो तुमने उसे ढूंढ लिया है।"

"मैंने उसे ढूंढ लिया है और शायद इसीलिए... अब वे मुझे ख़त्म करना चाहते हैं।"

"कौन है ये?"

"मुझे नहीं पता। पर मुझे उसका ठिकाना पता है। -- उसके चेहरे पर घनी मूंछें हैं ।”

"तुम बहुत चालाक लगती हो।" हमीद ने फिर उसे शक की निगाह से देखा।

"नहीं, उसकी सबसे बड़ी खासियत उसकी उंगलियाँ थीं। मैंने ऐसी उंगलियाँ पहले कभी नहीं देखीं। देखो, बीच वाली उंगली को छोड़कर, बाकी सभी उंगलियाँ एक ही लंबाई की हैं। यहाँ तक कि छोटी उंगलियाँ भी।

"ये सभी लगभग पहली उंगली के बराबर ही होंगी ।"

हमीद कुछ नहीं बोला... और... खाली... खाली आँखों से उसे देखता रहा।

******

लेडी प्रकाश अपनी कोठी के बरामदे में टहल रही थीं। रात के दो बज रहे थे, पर उनकी आँखों में नींद का नामोनिशान नहीं था। बगीचे में फैले अँधेरे में वह अक्सर आँखें घुमा घुमा देखती । उस वक़्त मन करता कि काश प्रकाश भी उ नके साथ टहलता हुआ दिखाई देता। वह उन्हें बहुत चाहते थे। वजह यह थी कि उनकी उम्र उनसे दोगुनी थी, शायद उससे भी ज़्यादा। लेडी प्रकाश ज़्यादा से ज़्यादा पच्चीस साल की रही होंगी। पर कुदरत की कारीगरी का बेजोड़ नमूना। संगमरमर से तराशी गई एक नाज़ुक मूर्ति सी लगतीं।

उन्होंने समाचार एजेंसी के खिलाफ मानहानि का दावा दायर किया था, लेकिन
अखबार में छपी एक ही खबर ने उसके मन में उथल-पुथल क्यों पैदा कर रही थी?

वह बालकनी से वापस अंदर आई। फ़ोन बज रहा था। उसने रिसीवर उठाया।
“ हैलो"
"आप कोन बात कर रहे है?”

“, तुमने आज अखबार में खबर देखी ? ज़रा सोचो, वो आदमी कितना होशियार है, जिसके पास तुम्हारे बारे में इतनी जानकारी है, एक बार वीएना में भी उससे मिल चुकी हो वो सारी जानकारी किसी अख़बार की सजावट के लिए भी कितने अनोखे तरीके से इस्तेमाल की जा सकती है और ऐसे मौकों पर तस्वीरें मुफ़्त में बाँटी जाती हैं। खैर, शुभ रात्रि। दूसरी तरफ़ से संपर्क टूट गया। और लेडी प्रकाश, जो अचंभित थी, कुर्सी पर गिर पड़ी।

अधूरी कविता और मुक्का

हमीद ग्लोरिया को घूर रहा था।

"और यदि वह आदमी आपके द्वारा दिए गए पते पर नहीं मिलता है तो ?," उन्होंने कहा।

मैं इस बारे में क्या कह सकता हूँ? ज़ाहिर है, करनल जैसे लोगों पर हमला करने के लिए,

गुर्दा चाहिए । अपराधी बहुत ही साहसी और चालाक होगा। उसे पता होगा कि मुझे उसके ठिकाने का पता चल गया है। नहीं, मुझे यकीन से कहना होगा कि उसे यह पता है, वरना वह मुझ पर हमला क्यों करता?"

"तुम पर हमला! --हमीद सोच में डूबा हुआ था। वह कुछ देर चुप रहा, फिर बोला। "नहीं, तुम मुझे यकीन नहीं दिला सकती । इस बीच तुमने कई रंग बदले हैं। मैं किस तरह यकीन कर सकता हूँ। हो सकता है यह हमला भी किसी साज़िश का नतीजा हो। इस तरह अपराधी तुम्हें हमारे क़रीब रखना चाहते हैं।" तुम्हें मेरी निजी जेल में रहना होगा।"

"निजी जेल से क्या मतलब है?"

"अर्थात् जब तक हम असली अपराधी को नहीं पकड़ लेते, तब तक तुम इसी इमारत में रहोगी।"

"और तुम इसे कैद कहते हो। अगर तुम धक्के मार के निकलोगे , तो भी मैं यहाँ-से नहीं जाऊँगी।" ग्लोरीया मुस्कुराई और बोली, मुझे मंजूर है

हमीद कुछ नहीं बोला। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करे। इसी बीच, एक नौकर अंदर आया। रॉइफ़ल उसके कंधे से लटक रही थी ।

"सर, हमें कब तक ऐसे ही जीना पड़ेगा?"

हमीद ने मुस्कुराते हुए कहा, "सारी रात जागते रहो।"

"लेकिन करनल साहब कह रहे हैं कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।"

"करनल साहब," हमीद उछल पड़ा।

"हाँ।"

वे कहां हैं?"

अपने कमरे में. ".

हमीद ग्लोरिया को ड्राइंग रूम में छोड़कर फ़रीदी के कमरे की ओर दौड़ा। नौकर की बात सही थी। फ़रीदी नाइटगाउन पहने हुए था और शायद सोने की तैयारी कर रहा था।

" क्या हंगामा मचा रखा है?" फ़रीदी उसे देखते ही बुदबुदाया।

" हंगामा ?हमीद ने अचानक अपना ऊपरी होंठ भींचते हुए कहा। शायद वह कुछ और कहने वाला था, लेकिन...फरीदी ने अपना हाथ उठाया और उसे रोक दिया।

"अब वह क्या कहती है?"

"आप किस तरह अंदर आए?"

"अपने पैरों पर चल कर ... तुम मेरे सवाल का जवाब दो।" फ़रीदी ने रूखे स्वर में कहा। हमीद कुछ पल उसे घूरता रहा, फिर ग्लोरिया की बताई कहानी दोहराई। हमीद के चुप हो जाने के बाद भी फ़रीदी कुछ नहीं बोला।

अब आप ही बताओ कि ये सब क्या था। आप मुझे हमेशा अंधेरे में रखकर अपमानित करते हो।"

"मैं तुम्हें प्रकाश में अपमानित करूँगा, निश्चिंत रहो।" फ़रीदी मुस्कुराया और बोला।

"डीआईजी पागल हो गया है। लियोनार्ड का ब्रीफ़केस रिकॉर्ड स्टोर से गायब हो गया है।

"ब्रीफ़केस बैग---फ़रीदी ने आश्चर्य से कहा...
हाँ, केस बैग... इसीलिए डी.आई.जी. ने लियोनार्ड की वापसी के बारे में सोच रहा है और फिर आज के अखबारों में लेडी प्रकाश के बारे में एक पत्र प्रकाशित हुआ है।

"हाँ, मैंने भी इसे देखा है, और यह सच है कि लियोनार्ड ने हमारी धरती पर कदम रखा है और यह संभव है कि मुझ पर हमला उसी ने किया हो।"

"मैं कल रात हुए हमले के बारे में जानना चाहता हूँ।"

कल रात हमला हुआ था, लेकिन वार खाली था और मेरे पकड़ने के बाद भी वो बच निकला।

"लेकिन सेट पर खून क्या था? मुझे तो आप ज़ख्मी भी नहीं लग रहे हो।"

"पता नहीं। हो सकता है हमलावर घायल हो गया हो। मैं उसकी गर्दन पकड़े हुए था।"

आपको क्या लगता है? क्या लियोनार्ड खुद ही हमले कर रहा है?"

"नहीं। उसके आदमी। वो सिर्फ़ योजनाएँ बनाता है। वो ख़ुद इस तरह का काम नहीं करता।"
"हैरानी की बात है कि उसने इतनी जल्दी आदमी यहाँ बुला लिए।"

"उनके लोग कभी यहां नहीं थे। उनके लोग हमेशा दुनिया के हर कोने में मौजूद रहे हैं। यहां आकर उन्होंने उन्हें पुनर्गठित किया।"

कुछ देर तक सन्नाटा रहा, फिर हमीद बोला। "ग्लोरिया के बयान के बारे में आपका क्या ख़याल है?"
"यह बयान तो सही लगता है।"

क्यों? आपने ऐसा कैसे मान लिया... उससे पहले भी तरह-तरह के बयान आए थे... लेकिन कहाँ? मैंने आपको कल रात के बारे में तो बताया ही नहीं । वो असलम की हैसियत में भी सच्चाई से वाकिफ थी ।”

336

हमीद ने भी वही घटना दोहराई।

"ठीक है।" फ़रीदी ने सिर हिलाया। "लेकिन अभी-अभी जो बयान दिया है! बिल्कुल। सही लगता है।"

"मैं इस पर विश्वास करने को तैयार नहीं हूँ," हमीद ने सोचते हुए कहा।"क्या यह संभव नहीं है कि यह हमला भी एक नाटक हो?"

"यह एक नाटक था..."

फिर भी आप ...!

"हाँ! लेकिन मैं इस नाटक में खलनायक की भूमिका निभा रहा था और जब आप उसे गेट से उठाकर अंदर ला रहे थे, तो मैं भी चुपचाप अंदर आ गया था।"

फ़रीदी चुप हो गया और मुस्कुराया, "यही हाल है तुम्हारा। अगर असली हमलावर मेरे अलावा कोई और होता, तो तुम्हारे ये सब इंतज़ाम धरे रह जाते।"

लेकिन मुझे डीआईजी की फटकार सुननी पड़ती है... इसके लिए कौन जिम्मेदार है? उसने परेशान होकर कहा.

परवाह नहीं. करनी ....!

अगर बल बचे दार होता तो मैं वाकई परवाह नहीं करता ....समझे आप ..?"

मैं सब समझ गया। लड़की को अभी यहीं रखो... लेकिन... "!..

खबरदार... खबरदार! हमीद ने फ़रीदी की बात पूरी करने के लिए बकना शुरू कर दिया । उसे अपनी बहन समझना और वगैरह-वगैरह...

"बकवास मत करो...जो मैं कहता हूँ वही करो," फ़रीदी ने कहा और उठकर दरवाज़ा बंद कर दिया।

कमरे में काफी देर तक धीमी फुसफुसाहटें गूंजती रहीं।

****

अगले दिन लेडी प्रकाश का जन्मदिन था। पूरा घर मेहमानों से भरा हुआ था। अचानक एक कर्मचारी ने उन्हें बताया कि कोई उन्हें फ़ोन कर रहा है।

कल रात का फ़ोन अभी भी उसके दिमाग़ में था। इसलिए वो काँप रही थी। हालाँकि सुबह से

अब तक उसे उसके कई फोन आ चुके थे, लेकिन फिर भी हर कॉल से उसका दिल कांप उठता था।

दूसरी तरफ से आवाज़ आई, "हैलो..." लेडी प्रकाश...

"हां तुम कौन हो?"

जवाब में एक हल्की सी हंसी सुनाई दी, फिर एक आवाज़ आई, "टेम्स नदी की एक मछली।"

देखो... मेरी विनती सुनो।" लेडी प्रकाश ने काँपती आवाज़ में कहा। "मैं अकेले इतनी बड़ी रकम का इंतज़ाम नहीं कर सकती... दया करो।"

"काश मेरे सिर पर कोई अरबपति होता।" दूसरी तरफ से आवाज़ आई।

ठीक है, पर मैं उनसे क्या कहूँगी? क्या बहाना बनाऊँगी? तीन लाख बहुत हैं।

"कोशिश तो करो... वरना अंजाम तो पता ही है।"

"मुझे सब पता है। मुझे माफ़ कीजिए। मेरे यहाँ मेहमान हैं। मैं फिर जवाब दूँगी। आपने जो अंजाम बताया है, वह मैं पसंद नहीं करूंगी ,जिसकी तरफ आपने इशारा किया था ।"

ठीक है... लेकिन जल्द ही मैं ज़्यादा इंतज़ार नहीं कर पाऊँगा।

लेडी प्रकाश रिसीवर गोद में लिए कुछ देर वहीं खड़ी रही, फिर लड़खड़ाते हुए कमरे से बाहर चली गई।

*****

हमीद ने फ़ोन रिसीवर नीचे रखा और डीआईजी की ओर मुड़ा। वह उस समय ख़ुफ़िया विभाग के ऑपरेशन रूम में थे, और हमीद ने यहीं से लेडी प्रकाश से फ़ोन पर बात की थी, और उसी समय उनकी बातचीत भी रिकॉर्ड की जा रही थी।

फिर, पंद्रह मिनट के भीतर, ऑपरेटर ने रिकॉर्ड तैयार किया और उसे ग्रामोफोन पर रख दिया।

रिकॉर्डिंग सुनने के बाद डीआईजी ने हमीद की ओर प्रशंसा भरी निगाहों से देखा।

"फरीदी ने तुम्हें बहुत अच्छी तरह प्रशिक्षित किया है।"

जवाब देने की बजाय हमीद शर्माते हुए मुस्कुराया,

"ठीक है! मेरे दफ़्तर में आ जाओ।"

कार्यालय पहुंचने पर डीआईजी ने एक कुर्सी की ओर इशारा किया और जब वे स्वयं बैठ गए तो हमीद भी उनके पीछे बैठ गए।

"इस बातचीत से पता चलता है कि किसी ने पहले भी उनसे इस बारे में बात की है।"

"हाँ, ऐसा ही लगता है।"

"तब हम उसे आसानी से पकड़ सकेंगे।"

हमीद ने कारण नहीं पूछा। डी.आई.जी. ने खुद कहा, "लेडी प्रकाश के फ़ोन से एक दूसरा फ़ोन जोड़ा जाना चाहिए और एक आदमी हर समय उसका जवाब देता रहे। जब भी लेडी प्रकाश के पास ऐसा कोई फ़ोन आए, हमें तुरंत पूछताछ करनी चाहिए और पता लगाना चाहिए कि वह कॉल कहाँ से आई है।"

हमीद ने तुरंत कुछ नहीं कहा।

क्यों...? डीआईजी ने उससे उसकी राय पूछी।

मगर दिक्कत ये है साहब...! हमीद चुप हो गया और कुछ सोचने लगा।

"हाँ, हाँ! बताओ क्या समस्या है।"

अगर पूछताछ में पब्लिक कॉल का ज़िक्र हुया तो ,

"हम्म...." डीआईजी भी सोचने लगे।

लियोनार्ड ऐसा जोखिम कभी नहीं उठाएँगे। ऐसे कामों के लिए सार्वजनिक बूथ का ही इस्तेमाल करता होगा ।

"तुम सही कह रहे हो।" डीआईजी ने सिर हिलाया। "लेकिन फिर तुमने उसके साथ अपनी बातचीत रिकॉर्ड क्यों की?"

देखिए, हम अपराधियों तक केवल लेडी प्रकाश के माध्यम से ही पहुंच पाएंगे, लेकिन यदि मैं अभी उनसे जाकर कुछ पूछूं, तो वह पूरी तरह से अनभिज्ञता दिखाएंगी और इस विचार का मजाक उड़ाएंगी। कोई उसे ब्लैकमेल करना चाहता है। लेकिन यह रिकॉर्ड उसे सही रास्ते पर वापस लाएगा।"

"ठीक है, अच्छा... अब मुझे फ़रीदी के बारे में कुछ बताओ।"

"मुझे नहीं पता कि उनके बारे में क्या कहना है। मुझे अभी तक उनसे कोई संदेश नहीं मिला है, न ही मुझे पता है कि वे कहाँ हैं, लेकिन मेरा दावा है कि वे जहाँ भी होंगे, सुरक्षित होंगे।"

"लेकिन अब मैं भी उनके इस तरीके से लाचार हो गया हूँ। हर मौके पर इस तरह का गैरज़िम्मेदाराना व्यवहार ठीक नहीं लगता।"

महामहिम! यह निःसंदेह गुस्ताखी है, लेकिन मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि अपनी जान बचाने के लिए अक्सर अवैध तरीकों का सहारा लेना पड़ता है। इस समय फ़रीदी साहब

की ज़िंदगी और मौत का सवाल है। लियोनार्ड या कोई भी हो किसी भी कीमत इनको मरने के लिए दृढ़ हैं। उस स्थिति में आपको स्वयं इस पर विचार करना चाहिए। ।"

डी.आई.जी. ने कुछ नहीं कहा, लेकिन उनके चेहरे पर भ्रम के निशान थे।

कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा। फिर डीआईजी ने सिर हिलाकर उसे जाने का इशारा किया और उसका ध्यान मेज़ पर रखे कागजों की तरफ़ गया।

*****

हमीद ने पिछली रात फरीदी द्वारा दिए गए कार्यों में से एक को पूरा कर लिया था, लेकिन दो और कार्य शेष थे, जिनमें से एक पूरी तरह से व्यर्थ और अव्यवस्थित मन का काम लग रहा था।

कल रात उसे उम्मीद थी कि आज सुबह नाश्ते की मेज़ पर फ़रीदी से मुलाक़ात होगी, लेकिन अँधेरे में वह कहीं और चला गया था। उसने हमीद के लिए एक नोट छोड़ा था कि वह उसके बारे में किसी को न बताए। उसने यह नहीं लिखा था कि वह उससे फिर कब और कहाँ मिलेगा। हमीद ठीक चार बजे घर से निकला था, अब उसे जो काम करना था वह अजीब था और उसका उद्देश्य, कम से कम, उसकी समझ से परे था।

बहरहाल, उसे काम तो करना ही था और उसका अंत तो किस्मत के भरोसे था। काम कुछ ऐसा था कि एक खास घर की खिड़की के नीचे खड़े होकर गुनगुनाना , और फिर गीत भी ऐसा की जिसमें घर की सब से खूबसूरत लड़की को संबोधित किया गया हो। अंत तो साफ़ था। लेकिन उसे इस बात का पूरा भरोसा था कि अंत की पूरी ज़िम्मेदारी फ़रीदी के सिर पर होगी। लाख पूछने पर भी फ़रीदी ने इस काम का मकसद नहीं बताया था।

घर ऐसे इलाके में था जहाँ ज़्यादातर विदेशी रहते थे। कविता अंग्रेज़ी में थी। इससे हमीद ने अंदाज़ा लगाया था कि वहाँ रहने वाले यूरोपीय-चीनी होंगे।

यह हरकत मेकअप करके करनी थी , ता कि यदि किसी प्रकार का कोई कांड हो जाए, तो अगले दिन के समाचार पत्र अंग्रेजी में यह नहीं लिख पाएंगे कि खुफिया विभाग का कोई अधिकारी गुंडागर्दी करते हुए पकड़ा गया है।

दरवाज़ा खुला था...और कमरा हँसी से भरा था, जो अक्सर मधुर होती थी।

वहाँ कुछ प्रकार की चीखें भी सुनाई दे रही थीं।

हमीद खिड़की के ठीक सामने पहुँचा। अंदर तीन अंग्रेज़ लड़कियाँ थीं। उनमें से एक के हाथ में एक छोटा रबर का गुब्बारा था और वह संभवतः उसे अन्य दो में से किसी एक पर खींच के मारना चाहती थी।

दोनों ने खुद को बचाने के लिए बहुत प्रयास किया था।

हमीद ने चारों ओर देखा। दूर-दूर हर जगह सन्नाटा था।

उसने धीरे धीरे कविता शुरू की.

"यह खिड़की... मेरी आशाओं का केंद्र है।"

लड़कियाँ चौंककर रुक गईं। वे बड़ी-बड़ी आँखों से उसे घूर रही थीं।

हमीद याद की हुई कविता को बार-बार दोहराता रहा।

"मैं इस घर की सबसे खूबसूरत लड़की को संबोधित कर रहा हूँ।"

यह खिड़की कल भी खुली था.
लेकिन आज इसके चारों ओर बहारें लहरा रही हैं।
हर सुबह सूरज की पहली किरण इससे होकर गुजरती है और किसी के गाल को चूमती है।
मैं उस लड़की को संबोधित कर रहा हूँ।

गुब्बारा हमीद के चेहरे पर लगा और फट गया, जिससे उसमें मौजूद रंगीन पानी बड़ी मात्रा में गले के नीचे. चले गया।

अगले ही पल वह अपनी छाती पकड़ के जोर-जोर से थूक रहा था।

फिर, इससे पहले कि हमीद संभल पाता, तूफ़ान उसके सिर पर पहुँच गया । एक दुबली पतली , बुज़ुर्ग महिला उससे कुछ कदम दूर खड़ी होकर गालियाँ दे रही थी।

"यह कमीना लड़कियों को छेड़ता है...जानता है कि मैं मिसेज वरनार हूँ।"

वह दोनों हाथ उठाकर हमीद पर झपटी, और हमीद पीछे हट गया।

"क्या बात है?" पास से किसी ने पूछा। हमीद अपनी हड़बड़ाहट में बस उसकी एक झलक ही देख पाया। वह भी एक अंग्रेज़ था।

"यह लड़कियों को परेशान करता है," मिसेज वरनार दहाड़ कर बोली ।

हमीद कूदकर भागना चाहता था, लेकिन अंग्रेज का मुक्का उसके जबड़े पर लग चुका था।

वह कई फुट की दूरी पर था.

और फिर उसे इस बात में भलाई समझी कि वह किसी तरह वहाँ से बच निकलने में कामयाब हो जाए क्योंकि आस-पास के बंगलों से लोग निकलने लगे थे। उसे ठीक से याद नहीं आ रहा था कि वह वहाँ से सिर पर पैर रख कर भागा था या पैर पर सिर ।

लिफाफा

हमीद ने दो दिन तक अपने ज़ख्मों की मरहम-पट्टी की। तीसरा काम और भी खतरनाक था और हमीद ने उसे अभी तक पूरा नहीं किया था। वह फ़रीदी का इंतज़ार कर रहा था। लेकिन उस घटना के बाद से उसकी उससे मुलाक़ात नहीं हुई थी।

और लियोनार्ड... उसने लियोनार्ड को तो पहले ही नर्क में झोंक चुका था। अगर कभी ऑफिस में उसका नाम भी आ जाता, तो हमीद ऐसे पेश आता जैसे किसी ने उसे गाली दी हो।

पहले तो वह फरीदी के बारे में पूछने वाले किसी भी व्यक्ति को जवाब नहीं देता था , लेकिन अगर कोई उन्हें बहुत ज्यादा परेशान करता तो उनका जवाब होता: "नरक में।"

फरीदी के प्रति अज्ञानता ही प्रदर्शित करता ।

तीसरा कार्य... अब वह इसके बारे में सोचना भी पसंद नहीं करता था।

अब उसे आश्चर्य हो रहा था कि उसका मकसद क्या था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि फरीदी ने उसे मिसेज वार्नर के पास क्यों भेजा था।

अब वह श्रीमती वार्नर और उनकी तीन बेटियों से निपटना चाहता था। इन दो दिनों में उसने उनके बारे में काफ़ी जानकारी दे दी थी।

आज उसने ठान लिया था कि किसी न किसी तरह उस अंग्रेज़ का सामना ज़रूर करेगा जिसने उस पर हमला किया था। उसे पूरा यकीन था कि वह ज़रूर मिसेज़ वार्नर का पड़ोसी होगा और मिसेज़ वार्नर उसे जानती होंगी।

लेकिन वे कैप्टन हमीद के रूप में मिसेज़ वार्नर से मिलने आए थे।

मिसेज वार्नर उस समय चौंक गइ जब उसने उसका विजिटिंग कार्ड देखा।

"मैं एक रिपोर्ट की जांच करने आया हूं।"

कैसी रिपोर्ट है, कैप्टन...! अरे रुको... इस मौसम में तो आपको चाय पसंद आएगी। मिसेज़ वार्नर ने कहा।

"नहीं, शुक्रिया," हमीद ने रूखेपन से कहा। "रिपोर्ट तुम्हारे ख़िलाफ़ लिखी गई है।"

"मेरे ख़िलाफ़ , नहीं...," उसने हैरानी से कहा।

"दो दिन पहले आपने अपनी लड़कियों की मदद से एक आदमी, मिस्टर खान, को न सिर्फ़ लूटा, बल्कि उसके साथ मारपीट भी की। मिस्टर खान ने रिपोर्ट में लिखाया है कि आपकी लड़की उसे बहला-फुसलाकर यहाँ ले आई और आपने उसकी जेब से डेढ़ हज़ार रुपये निकाल लिए, फिर दो-तीन आदमियों ने मिलकर उसके साथ मारपीट की।"

"ओह... तो इस कमीने ने यह लिखा है," मिसेज़ वार्नर ने कहा, और "कमीना" शब्द सुनते ही हमीद का खून खौलने लगा।

एक मिनट रुको। मिसेज़ डर्नर ने कहा। "मैं मिस्टर बार्न को फ़ोन करती हूँ।"

वे यहाँ थे और मैं उनके सामने ही तुमसे इस मुद्दे पर बात करूँगी ।

"शौक से बुलाओ," हमीद ने कहा और उसकी नज़रें बचाकर उयस्की एक लड़की को आँख मारी। तीनों लड़कियाँ भी कमरे में थीं, जिसे आँख मारी गई थी, वह मुस्कुराई और मुँह फेर लिया।
"जब तक मैं वापस नहीं आ जाती, तुम लोग इस मुद्दे पर बात नहीं करोगी।" उसने अपनी लड़कियों की तरफ देखते हुए कहा और बाहर चली गई।

लड़कियों ने हमीद की तरफ़ देखा, एक-दूसरे को इशारा किया और हंसने लगीं।

"क्या मुझमें कोई ऐसी बात है जो तुम्हें हँसाती है?"

लड़कियाँ और ज़ोर से हिलने लगीं। वे सब जवान थीं और यह पहचानना मुश्किल था कि कौन छोटी है और कौन बड़ी। जिस लड़की को हमीद ने आँख मारी थी, वह उससे आँखें नहीं मिला रही थी और थोड़ी उदास दिखने लगी थी। हमीद को लगा कि यह तरीका ठीक रहेगा। वरना, ये लड़कियाँ हँसती ही रहेंगी और वह खुद को बेवकूफ़ ही समझता रहेगा। उसने बारी-बारी से बाकी दोनों को आँख मारी और फिर हमीद आँख मारने के असर पर विचार करने लगा।

थोड़ी देर बाद मिसेज वार्नर एक अंग्रेज़ के साथ कमरे में दाखिल हुई और हमीद ने अंग्रेज़ को पहली नज़र में ही पहचान लिया।

उसी ने उसके जबड़े पर घूँसा मारा था। हमीद ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा, और उसका नज़रिया काफ़ी तिरस्कारपूर्ण था। अंग्रेज़ ने भी शायद यही महसूस किया होगा।

"अब पूछिए..... मिस्टर बार्न से।" मिसेज़ वार्नर ने कहा।

"मैं आपसे पूछता हूं, अगर ये आपके गवाह हैं, तो क्या अदालत में उनकी जरूरत होगी?"

लेकिन कम से कम मैं सच तो बता सकता हूँ। मिस्टर बार्न मुस्कुराए और बोले।

"मैं उस व्यक्ति से बात करूंगा जिसके खिलाफ रिपोर्ट लिखी गई है।"

"यह रिपोर्ट किसने लिखी?" बार्न ने पूछा।

किसी मिस्टर खान ने ... श्रीमती वार्नर ने उत्तर दिया।

क्या आपके यहाँ फ़ोन है? बारन ने मिसेज़ वार्नर से पूछा। हमीद ने उनकी आँखों में एक राक्षसी चमक देखी.

"...नहीं

"ठीक है, मैं पुलिस स्टेशन से इसकी जांच करूंगा," बार्न ने कहा और बाहर चला गया।

हमीद का चेहरा एक बार फिर पीला पड़ गया। ज़ाहिर है, थाने में ऐसी कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई थी। उसे उम्मीद थी कि वह मिसेज़ बरनार को रुआब में ले लेगा , वरना वह थाने के इंचार्ज इंस्पेक्टर जगदीश को पहले ही समझा चुका होता।

वह बेचैनी से अपनी कुर्सी पर हिलने लगा। अब उसके पास भागने के अलावा कोई चारा नहीं था।

कोई विकल्प था. ही नहीं

उन्होंने उठते हुए कहा, "मिसेज़ बरनार , सबसे अच्छा तो यही होगा कि मैं तुम्हें कोतवाली में बुलाने के लिए कोई सड़ा हुआ कांस्टेबल भेज दूँ। फिर मैं तुम्हारे समर्थकों को देखूंगा ।"

मिसेज़ बरनार उसे रोकती रही, लेकिन वह जल्दी से बाहर निकला और कार में बैठ गया।

*****

जब बार्न वापस लौटा, तो उसने हमीद को कमरे में नहीं देखा। वमिसेज़ बरनार गंभीर लग रही थी ।

वह कहाँ गया था? बार्न ने पूछा।

"मैंने तुम्हें कोतवाली में तलब करूंगा , धमकी दे लकार गया है।"

बार्न धीरे से हँसा और इधर-उधर देखने लगा। मिसेज़ वार्नर की लड़कियाँ कमरे से बाहर जा चुकी थीं ।

"तुम बिल्कुल मूर्ख हो, एम्मा," बार्न ने धीरे से कहा।

मिसेज़ बार्नर के चेहरे पर पहले तो आश्चर्य के भाव दिखे, फिर वह चुकंदर की तरह लाल हो गया। वह बार्न को बस कुछ ही दिनों से जानती थीं। बस इतना ही, इसलिए वह न सिर्फ़ उन्हें उनके उपनाम से पुकार रहा था, बल्कि उन्हें मूर्ख भी कह रहा था। मिसेज़ डार्नर उन महिलाओं में से थीं जो शिष्टाचार और रखरखाव का बहुत ध्यान रखती थीं।

मिस्टर बार्न... उसने रूखेपन से कहा। "मुझे लगता है कि हम अभी भी एक-दूसरे को जान रहे हैं, लेकिन अभी तक हम अंतरंगता के दायरे में नहीं पहुँचे हैं।"

बार्न ने मुस्कुराते हुए कहा, "हम एक दूसरे को वर्षों से जानते हैं।"

"श्रीमान बार्न, मैं बेतक्क्लुफ़ी की आदी नहीं हूं।"

"एम्मा... मैं तुम्हें फिर से कहता हूँ कि तुम्हें इस बेतक्क्लुफ़ी पर गर्व होगा।"

श्री बार्न्स ने गंभीर भाव से कहा।

"हा...क्या यह अफ़सोस की बात होगी?" बार्न मुस्कुराया और अपनी जेब से एक कार्ड निकालकर उsकी ओर बढ़ा दिया।

वह खूबसूरत आदमी उठ खड़ा हुआ और वार्नर की ओर बढ़ा। । उसने अपना हाथ ऊपर उठाया। और कार्ड दिखाया कार्ड पर मोटे अक्षरों में **लियोनार्ड** लिखा था।

मिसेज बार्नर बीमार दिखने लगी.

"बैठ जाओ," बैरन ने धीरे से कहा।

मिसेज बार्नर बैठी गयी । वह अपने सूखे होंठों पर जीभ फिराती रही।

हाँ, मैं कह रहा था कि कोतवाली में ऐसी कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं हुई।

फ़रीदी का असिस्टंट हमीद था और वह किसी तरह के चक्कर में है।

"....लेकिन आप

"हाँ, आपको आश्चर्य होगा। आप मुझे जीवन में पहली बार देख रहे हैं। आप दुनिया के तीसरे या चौथे एजेंट हैं जिन्हें यह सम्मान मिला है।"

"मैंने अखबारों में आपके भागने के बारे में पढ़ा था, लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि आप यहां आएंगे।"

फ़रीदी... बैरन ने दाँत पीसते हुए कहा, "फ़रीदी मुझे यहाँ लाया है और वो अब तक छिपा हुआ है। मैं उसे मारना चाहता हूँ, चाहे वह चूहे के बिल में ही क्यों न हो।"

"ओह! तो वे हमले...आपके द्वारा किये गये थे।"

345

"हाँ! वो बहुत भाग्यशाली है, लेकिन मैं उसे जीवित नहीं रहने दूँगा।"

पर उसका ये असिस्टंट यहाँ के चक्कर क्यों लगा रहा है ? अब समझ आया। शायद उस दिन… "उसका कोई आदमी रहा हो।"

"ओह.... एम्मा.... वह तो हमीद ही था।"

हाँ...वे जानते हैं कि आप मेरी एजेंट हैं। इसलिए वे आपके ज़रिए मुझ तक पहुँच सकते हैं।

"वह पहुँचने की कोशिश कर रहा है। लेकिन मुद्दा यह है कि आप हमीद के ज़रिए फ़रीदी तक पहुँच सकती हैं।"

"यह कैसे संभव है, सर?"

आपकी लड़कियाँ उनसे आसानी से सब कुछ पूछ लेंगी।

"नहीं साहब! मैं अपनी लड़कियों को बिगाड़ना नहीं चाहती।"

एम्मा! तुम मुझसे यह कह रही हो। क्या ये तुम्हारी लड़कियाँ हैं? मुझे यह भी पता है कि तुम एक दिन इनके साथ क्या काम करोगी। क्या ये तीन अलग-अलग अनाथ लड़कियाँ नहीं हैं जिन्हें तुमने लंदन के एक अनाथालय से गोद लिया है और पाला है? क्या इनके घेरे में दर्जनों अमीर आदमी नहीं हैं? क्या तुम्हें भविष्य के वादों पर इनसे मोटी रकम नहीं मिल रही है? क्या? यह अलग बात है कि तुमने अभी तक इनसे काम करवाना शुरू नहीं किया है।

"माफ़ी चाहती हूँ, सर," मिसेज़ वार्नर ने बड़बड़ाते हुए कहा। "लेकिन फरीदी कैसे जनता है ? मैं आपके लिए काम करती रही हूँ।"

"हा... अब तक आप बहुत बड़ी ग़लतफ़हमी में रहे हैं। फ़रीदी मेरे हर एजेंट को जानता था और अब भी जानता है, लेकिन वह आपके ख़िलाफ़ कोई सबूत नहीं दे सका और न ही दे सकता है। मैं इसे अपनी सबसे बड़ी उपलब्धि मानता हूँ कि मेरा कोई भी एजेंट कभी क़ानून की गिरफ़्त में नहीं आ सका।"

"मुझे इसका अनुभव है, सर।"

"मुझे फ़रीदी की लाश चाहिए, एम्मा, और मैं इसे किसी भी क़ीमत पर हासिल करूँगा। अगर तुम या तुम्हारी लड़कियाँ आज मेरे किसी काम आ गईं, तो तुम एक साल के अंदर करोड़पति बन जाओगी।"

"मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगी , सर।"

धन्यवाद एम्मा।”

वह चला गया और एम्मा आधे घंटे तक सोफ़े पर बेसुध पड़ी रही। उसे लगा जैसे उसका दिल ज़ोरों से धड़क रहा है। ज़िंदगी में पहली बार उसने लियोनार्ड को देखा था।
****

हमीद बहुत बोर हो रहा था। उसे लग रहा था जैसे वो अपनी ज़िंदगी से ऊब गया है। ग्लोरिया उसके लिए हमेशा की परेशानी बन गई थी। वो काफ़ी खूबसूरत थी... लेकिन एक वो कमी! बातचीत के दौरान वो अपने होंठ ऐसे भींच लेती थी जैसे उसे सर्दी लग गई हो। उसकी वजह से (मैं उसे जो भी कहूँ) वो कभी-कभी हमीद को आटा गूंथकर उठी हुई किसी किसान औरत जैसी लगती थी। हमीद की खोपड़ी अजीब थी और इस खोपड़ी पर एक ऐसी लड़की थोपी गई थी जिसका रूप वो देखना नहीं चाहता था।

शाम हो चुकी थी। वह बरामदे में बैठा चाय पी रहा था और ग्लोरिया उसके साथ थी। अचानक, उसने गेट पर मिसेज़ वार्नर की सबसे खूबसूरत लड़की को देखा।

ये कौन है? ग्लोरिया ने हमीद को घूरते हुए कहा।

"वार्नर की लड़की पास आ रही थी , कोई तुम्हें पकड़ने की कोशिश कर रहा है।"

होगी कोई , तुमसे मतलब ? -- हमीद झुंझला गया।

मुझे खेद है, मैं शर्मिंदा हूं। ग्लोरीया बोली

लड़की बरामदे में आई. हमीद खड़ा हो गया.

ओह... कैप्टन। लड़की गुनगुनायी।

"बैठो! बैठो"

ममी को बहुत चिंता हो रही है। लड़की बैठते हुए बोली, "आखिर क्या बात है? कोतवाली में किसी ने रिपोर्ट दर्ज नहीं कराई।"

"चिंता मत करो," हमीद ने मुस्कुराते हुए कहा। "उसने मुझसे शिकायत की थी और मैं सच जानना चाहता था।"

सच तो ये है कि वो हमारी खिड़की के सामने खड़ा होकर गीत गा रहा था। तुम खुद ही बताओ, क्या शरीफों का यही तरीका है? मिस्टर बार्न ने इसकी मरम्मत कर दी! क्या वो तुम्हारा दोस्त है?

हाँ, यही तो दिक्कत है। खैर, मुझे तुम्हारी बात पर यकीन है, लेकिन ये मिस्टर बार्न कौन हैं?

"हमारे पड़ोसियों में से एक! वह पास के बंगले में रहता है।"

"चाय पियो।" हमीद ने प्याला उसकी ओर बढ़ाया।

"धन्यवाद।" कप स्वीकार कर लिया गया।

ग्लोरिया एक क्षण तक उसे घूरती रही, फिर उठकर अंदर चली गई।

"यह कौन थी ?" लड़की ने पूछा.

"मेरे निजी सचिव," हमीद ने अपनी पाइप में तांबाकू भरते हुए कहा।

"तब तुम उसे चाहते भी होगे ? " लड़की ने मुस्कुराते हुए कहा।

"नहीं, वह तुम्हारे जितना सुन्दर नहीं है।"

"शट अप ," लड़की ने झेंपती मुस्कान के साथ कहा। "तुमने मुझे आँख क्यों मारी?"अगर मई देख लेती तो ?

"मैं भी उनको भी आँख मार देता।"

"तुम बहुत बेहुदे भी हो।" लड़की अचानक चौंकी।

" पूरी बात सुनो! मैं उन्हें आँख मारता रहता और फिर उन्हें यकीन हो गया कि मेरी आँखें

खराब हैं । "

लड़की चुप नहीं रही, "तुम बहुत दुष्ट भी हो।"

"आप बहुत खूबसूरत हैं।"

".....चुप रहो

"जैसी आपकी इच्छा।"

तुम मेरे साथ चलो, एवरना ममी को दिल का दौरा पड़ेगा और उसे महीनों तक चारपाई पकड़ लेगी ।

हमीद ने कहा, "मैं अवश्य जाऊंगा।"

****

जब हमीद श्रीमती वार्नर को हर तरह से आश्वस्त करने के बाद उनके बंगले से बाहर निकला, तब तक अंधेरा हो चुका था।

उसने अपनी कार बंगले से थोड़ी दूरी पर खड़ी की थी। जैसे ही वह कार की तरफ़ बढ़ा, एक आदमी ने उसे धक्का देकर आगे बढ़ा दिया और हमीद के पैरों पर कुछ गिर गया।

348

"अंधे हो क्या?" हमीद चिल्लाया। लेकिन उस आदमी ने मुड़कर भी नहीं देखा और फिर थोड़ी दूर चलकर अँधेरे में गायब हो गया। हमीद को उस चीज़ का ख्याल आया जो उसके पैरों पर गिरी थी।

हमीद ने झुककर उसे उठाया, वह एक लिफ़ाफ़ा था।

फिर वह जल्दी से गाड़ी के पास पहुँचा। गाँव से निकलकर उसने एक जगह गाड़ी रोकी। दरअसल वह उस लिफ़ाफ़े को खोलना चाहता था जिस पर उसका नाम लिखा था। उसने अंदर की लाइट जलाई और लिफ़ाफ़ा खोला, और जैसे ही उसने लिखावट देखी, वह उसके पैरों और तालू को छू गई।

यह फ़रीदी का लिखा हुआ था। उन्होंने ही इसे लिखा था।

"अपना समय बर्बाद मत करो , । तुझे बहुत लड़कियाँ मिलेंगी। तीसरा काम अभी तक नहीं किया। आज रात दस बजे करना है। अगर इसमें ज़रा भी देर हुई तो सज़ा मिलेगी। समझ जा। तू भी मेरी कहानी से वाकिफ़ है। तुझे शायद ये पागलपन लगे। पर मैं जो कहता हूँ वो करना ही होगा। चाहे तू उसका मक़सद समझे या नहीं।"

पिंजरा और लाश

हमीद पागलों की तरह गाड़ी चला रहा था। उसे अपना तीसरा काम तो करना ही था। दस बजने में अभी तीन घंटे बाकी थे। लेकिन काम... हमीद स्टीयरिंग व्हील से एक हाथ हटाकर अपना सर रगड़ता रहा।

थोड़ी देर बाद गाड़ी एक सुनसान सड़क पर आ गई। हमीद कैडी जैसी शानदार गाड़ी के साथ बड़ी बेरहमी से पेश आ रहा था। उस समय गाड़ी न सिर्फ़ कच्ची सड़क पर चल रही थी, बल्कि कभी-कभी ऐसे गड्ढों में भी गिर जाती थी जहाँ बारिश का पानी जमा हो जाता था।

तीन-चार दिन पहले बारिश हुई थी और पूरा रेगिस्तान मेंढकों की आवाज़ से गूंज रहा था। हमीद ने कैडी को एक जगह रोक दिया। वह नीचे उतरा और अपनी टॉर्च निकालकर कैडी की तबाही का नज़ारा देखने लगा। उसके होठों पर एक आश्वस्त मुस्कान थी। चारों ओर पानी से भरे अनगिनत गड्ढे थे। हमीद की टॉर्च की रोशनी इधर-उधर रेंग रही थी।

तभी अचानक उसने अपनी जेब से रूमाल निकाला और एक बड़े मेंढक पर झपटा, लेकिन इससे पहले कि वह उसके करीब पहुंच पाता, वह पानी में रेंग गया।

ऐसा लग रहा था जैसे हमीद को मेंढक पकड़ने का दौरा पड़ गया हो। लेकिन पर वह एक भी मेंढक नहीं पकड़ पाया।

अंततः उसने दूसरे तालाबों के किनारे बैठे मेंढकों पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। यह सब उसकी झल्लाहट का नतीजा था।

फिर उसे होश आया। उसने अपनी कलाई घड़ी की टॉर्च जलाई और कुछ बुदबुदाने लगा। दस बजने में अभी ढाई घंटे बाकी थे।

वह कुछ मिनट वहीं खड़ा रहा, अपना माथा रगड़ता रहा। फिर वह कार में कूद गया। कैडी फिर से झाड़ियों के बीच से गुज़र रही थी। और फिर, लगभग पंद्रह मिनट बाद, वह एक छोटे से गाँव में रुकी। वह एक मछुआरा गाँव था।

*****

केवास बड़ा होटल नहीं था, लेकिन अपनी साफ़-सफ़ाई और भव्यता के कारण काफ़ी लोकप्रिय था। इमारत तीन मंज़िला थी। होटल भूतल पर था। ऊपर की दो मंज़िलें मेहमानों के लिए थीं। होटल का मालिक शहजाद एक वहमी मिजाज का इंसान था , यहाँ की सफाई उसी का नतीजा था ।

वो काउंटर के पीछे बैठता था और काउंटर पर एक नौकर रखा था ताकि वो बीच-बीच में काउंटर की धूल साफ़ कर सके। अगर शहज़ाद के कपड़े किसी और के कपड़ों से रगड़ जाते, तो वो या तो अपने कपड़े धो लेता या फिर बदल देता। उसका ये पागलपन पागलपन की हद तक पहुँच गया था... और इसी पागलपन की वजह से वो अपने कर्मचारियों के लिए परेशानी का सबब बन गया था।

अपने कर्मचारियों के लिए उनका आकर्षण चाहे जो भी रहा हो, कम से कम यह उनके लिए बहुत लाभदायक साबित हुआ, क्योंकि उच्च वर्ग भी धीरे-धीरे उन्हें पसंद करने लगा।

शहज़ाद हमेशा होटल में मौजूद रहता था। उसका रूप-रंग जो भी था, वह उसकी तंत्रिका-कमज़ोरी का नतीजा था, क्योंकि तंत्रिका-कमज़ोरी वाले लोग शहज़ाद जितने निडर और झगड़ालू नहीं होते। आदतों और तौर-तरीकों के मामले में शहज़ाद अच्छा इंसान नहीं था। क्योंकि उसके होटल में ठहरने वालों को अवैध रूप से प्राप्त दवाओं से लेकर औरतों तक, सब कुछ उपलब्ध था।

350

शहज़ाद एक गुस्सैल चिड़चिड़ा और घमंडी इंसान था, लेकिन वह अपने ग्राहकों को बड़ी शांति से बर्दाश्त करता था। वह काउंटर से दो-तीन फुट की दूरी पर बैठता था ताकि उसका शरीर और कपड़े ग्राहकों की बेबाकी से सुरक्षित रहें। अक्सर, बेबाक ग्राहक उसका ध्यान खींचने के लिए उसके कंधों पर हाथ रख देते थे या उसकी बाँहों को छूकर उससे बातें करते थे। ऐसे मौकों के बाद, उसे हमेशा अपने कपड़े बदलने पड़ते थे।

आज भी, वह काउंटर से तीन फुट दूर एक आरामकुर्सी पर लेटा नौकरों को घूरता रहता। वह उनकी हर हरकत पर नज़र रखता। अगर कोई कपड़ों में हाथ डालकर उसके जिस्म को खुजलाता हुआ दिखाई देता, तो वह तब तक साँस नहीं लेता जब तक वह दोबारा हाथ न धो ले।

वह काफी देर से कुर्सी पर लेटा हुआ था, उठने की कोशिश कर रहा था। अचानक उसकी नज़र काउंटर के बाएँ सिरे पर पड़ी, जहाँ एक पिंजरा रखा था और पिंजरे पर एक काला कवर लगा था। पिंजरा बिल्कुल वैसा ही था जैसा तीतर पालकों के पास होता है।
" ओह... क्या लवबर्ड्स भी यहाँ आने लगे हैं?"

शहजाद गुर्राते हुए नौकर की ओर मुड़ा।

"नहीं साहब..." नौकर ने डाइनिंग हॉल में इधर-उधर देखते हुए कहा।

"तो फिर ये तीतरों का पिंजरा कहाँ से आया?" शहज़ाद झल्ला कर खड़ा हो गया।

"हायें!" वेटर ने भी आश्चर्य व्यक्त किया। फिर वह तेज़ी से पिंजरे की ओर दौड़ा और उसे काउंटर से उठा लिया।

और फिर जो कुछ हुआ, वह शहज़ाद जैसे इंसान के लिए मौत जैसा था। काउंटर से बने पिंजरे का निचला हिस्सा ज़मीन पर गिर पड़ा और उसी समय, दस-बारह मोटे-ताजे, गंदे मेंढक चारों तरफ़ से इधर-उधर भागने लगे। शहर दहाड़ता हुआ पीछे हट गया, और उसकी टक्कर से एक काँच का कैबिनेट टूट गया।

वह गंदे मेंढकों से बचने के लिए बार-बार इधर-उधर हिल रहा था, और उसी समय काउंटर के पीछे अफरा-तफरी फैल रही थी। रैक पर रखी बोतलें, डिब्बे, जार और चीनी के कटोरे नीचे गिर रहे थे, तरह-तरह की आवाज़ें कर रहे थे। फिर पूरे डाइनिंग हॉल में अफरा-तफरी मच गई। लोग अपनी मेज़ें छोड़कर काउंटर की ओर भागने लगे।

कैप्टन हमीद भी इसी भीड़ में मौजूद थे और शहज़ाद को ऐसे उछलते हुए देख रहे थे मानो वह आसमान से मेंढक बनकर गिर पड़ा हो। धीरे-धीरे पूरा हॉल ठहाकों से गूंजने लगा। तभी दो-तीन आदमी शहज़ाद को खींचकर हॉल में ले आए। वह बच्चे की तरह हाँफ रहा था और साथ ही उसका मुँह से गालियों का तूफ़ान भी निकल रहा था।

तेरह नंबर, तेरह नंबर! ---वह ज़ोर से चिल्लाया। फिर अपने आदमियों को पुकारने लगा।

"शरफ़ों -- रहीम ----गुल ख़ान ---अफ़ज़ल पठान.... सब लोग, चलो, तेरह नंबर.... बाहर निकलने न पाये .... साले को मार डालो.... अरे छोड़ो मुझे ... अकेला छोड़ दो....! उसने एक आदमी को धक्का दिया। फिर वह तेज़ी से दूसरी मंज़िल की ओर भागा। तीन, चार नौकर भी उसके साथ पीछे दौड़ रहे थे.

हमीद भी पीछे चल पड़ा। कई ग्राहक भी उसके पीछे चलना चाहते थे, लेकिन खुफिया विभाग के दो आदमियों ने उनका रास्ता रोक लिया और उन्हें ऊपर जाने से रोकने की कोशिश की, जिससे ऐसा लग रहा था कि वे भी होटल से जुड़े हुए हैं।

दरवाजे पर पहुंचकर शहजाद कमरा नंबर तेरह के सामने रुक गया और फिर दरवाजे पर इस तरह से जोर-जोर से दस्तक देने लगा मानो वह उसे घूंसे और थप्पड़ों से तोड़ देगा।

लेकिन अंदर से कोई जवाब नहीं आया। हालाँकि अंदर की रोशनी शीशे से साफ़ दिखाई दे रही थी और दरवाज़ा अंदर से बंद था, फिर भी कोई सोया हुआ आदमी भी इस आवाज़ से जाग जाता।

अगर शहज़ाद ने झपट्टा मारकर शीशा तोड़ दिया और हाथ अंदर डाल दिया, दरवाज़ा खुल गया।

और शहजाद तूफान की तरह दौड़ा।

हमीद थोड़ी दूरी पर खड़ा होकर स्थिति बदलने का इंतजार कर रहा था।

अचानक उसे शहज़ाद की धीमी आवाज़ सुनाई दी... " खून... खून... क़त्ल... "!

हमीद दरवाज़े की तरफ़ झपटा और शहज़ाद से टकरा गया। वह असमंजस की हालत में कमरे से बाहर निकल आया।

“क्या बात है?” हमीद ने डाँटते हुए पूछा।

शहज़ाद हांफते हुए बोला, "किसी ने उसे मार डाला। मुझे कुछ नहीं पता... सबने देखा है... शराफ़... अफ़ज़ल... अरे, बोलो ... क्या मैंने उसे मारा?"

"मेरे साथ आओ," हमीद ने उसे कमरे की ओर खींचते हुए कहा।

"मैं नहीं जाऊँगा।" शहज़ाद ने झटककर अपना हाथ हटा लिया।

" होश में आओ, तुम पुलिसवाले से बात कर रहे हो।” हमीद का स्वर कठोर था। शहज़ाद चौंककर उसे घूरने लगा।

352

"मेरे साथ आओ," हमीद ने फिर कहा, फिर अपने नौकरों की ओर मुड़ा। "मेरी इजाज़त के बिना तुम नीचे नहीं जाओगे।"

दूसरी मंज़िल के किरायेदार गलियारे में जमा हो रहे थे। हमीद ने उनसे अपने कमरे देखने को कहा।

फिर वह दरवाज़े के सामने खड़ा हुआ और कमरे के अंदर देखा। उसके ठीक सामने एक आदमी ज़मीन पर औंधे मुँह पड़ा था, उसके चारों ओर खून फैला हुआ था।

हमीद ने शहजाद और उसके आदमियों को वहीं रुकने का संकेत दिया और सीढ़ीयों के पास पहुंच गया।

उसके दो आदमी अभी भी नीचे थे। उसने उनमें से एक को आवाज़ दी। जब वह ऊपर आया, तो उसने उससे कहा, "कोतवाली फोन करो , क्योंकि तेरहवें कमरे में खून- हो गया है।"

हमीद फिर तेरहवें कमरे में लौट आया। नीचे के सारे दरवाज़े बंद कर दो। कोई बाहर न जाए।

****

शहज़ाद की हालतबुरी थी। वह एक आरामदायक कुर्सी पर लेटा हाँफ रहा था। तीनों सब-इंस्पेक्टर उसे भूखे भेड़ियों की तरह घूर रहे थे, और हमीद पैर फैलाए, दोनों हाथ कमर पर रखे कमरे का जायज़ा ले रहा था। पाइप उसके दांतों में दबा हुआ था, और कभी-कभी उसके होंठों के बाएँ कोने से धुएँ की पतली लकीरें निकलकर हवा में उड़ने लगतीं।

अचानक शहजाद उछल पड़ा और ऊंची आवाज में बोला, "लेकिन यह शव उस आदमी का नहीं है जो तेरह नंबर पर रह रहा था।"

क्या? हमीद ने पाइप मुँह से निकाला और उसी समय उसकी टाँगें आपस में फँस गईं।

"हाँ... मैं बिल्कुल सही कह रहा हूँ। आप मेरे नौकरों और आस-पास के कमरों में रहने वालों से पूछ सकते हैं।"

हमीद चिल्लाया, "तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?"

"मैं होश में नहीं था।"

आप बकवास कर रहे हैं। आपने हॉल में दर्जनों लोगों के सामने चिल्लाकर कहा कि तेरह नंबर

वाले व्यक्ति को मार डालो।"

हाँ! मुझे याद है। मैंने ऐसा कहा था।" शहज़ाद ने कहा। उसने काफ़ी हद तक खुद पर नियंत्रण पा लिया था। - फिर क्या हुया ॥?

" तेरह नंबर। वो बड़ा सुअर था... मुझे मेंढक कहता था। मैं अपने ग्राहकों की हर हरकत बर्दाश्त कर लेता हूँ। इसलिए मैं उससे बचता था। आज ही दो घंटे पहले की बात है। मैंने अपने काउंटर पर एक पिंजरा रखा देखा। मैं हैरान रह गया। पिंजरा अब भी काउंटर के पीछे ही मिलेगा और मेंढक भी वहीं होंगे।

"क्या बात कर रहे हो?" एक सब-इंस्पेक्टर ने उसे डाँटा। "अब क्या तुम मानसिक रूप से बीमार होने का नाटक करोगे?"

जाओ! देखो। शहज़ाद ने हाथ हिलाकर कहा। "पिंजरा कपड़े से ढका हुआ था और उसमें मेंढक थे... जाओ और देखो , मेरा हज़ारों का नुकसान हुआ है।"

फिर वही बकवास...!"

"ठीक है," हमीद ने सब-इंस्पेक्टर से कहा। "मैंने भी मेंढक देखा है, दी।"

" मई समझा की यह उसी कमीने की हरकत है।" शहज़ाद बोला। " मुझे मेंढक कह कर चिढ़ाया करता था और मुझे लगा कि शायद ये इसी नि किया होगा । इसीलिए... मैंने गुस्से में कहा था कि मेरी जगह जो भी होता, यही कहता और फिर अगर मैं ने उसे मारा भी होता , तो भी क्या ।? वो वही होता जिस पर मुझे शक था... लेकिन लाश तो उस आदमी की है जिसे मैंने

पहले कभी देखा ही नहीं । मैं किसी और आदमी को क्यों मारने लगा और सुनिए, साहब, मुझे इसकी ज़रा भी परवाह नहीं। मैं बच्चा नहीं हूँ। डॉक्टर की रिपोर्ट ही बताएगी कि हत्या कब हुई थी।"

हमीद ने पूछा, "तेरह नंबर में कौन था?"

"होटल के रजिस्टर में नाम-पता लिखा होगा।" शहज़ाद बोला। "पहले तुम उसके पड़ोसियों से उसका हुलिया पूछ लो। मैं तब से तुम्हारे साथ हूँ। इसलिए तुम यह नहीं कह पाओगे कि मैंने अपने किरायेदारों को कुछ पहले से समझाया है।"

"मुझे तर्क पर भाषण मत दो," हमीद ने रूखेपन से कहा। "जितना पूछा है, उससे ज़्यादा मत बोलो ।"

हमीद उसे वहीं छोड़कर दूसरी मंज़िल पर चला गया। वहाँ उसने दूसरे कमरों के किरायेदारों से पूछताछ शुरू कर दी।

और सभी ने कहा कि यह शव उस व्यक्ति का नहीं है जिसे शाम चार बजे तक उस कमरे में देखा गया था।

मृतक जो भी था, हमीद को उसकी मौत का दुःख था.... अफ़सोस इस बात का था कि वही एकमात्र व्यक्ति था जिसके ज़रिए लियोनार्ड तक पहुँचा जा सकता था.... हमीद ने पहली नज़र में ही इस बड़े नुकसान का अंदाज़ा लगा लिया था। मृतक के चेहरे पर घनी मूंछें थीं और हाथों की छोटी उंगलियां तीसरी उंगली जितनी लंबी थीं और उसकी घनी मूंछें नकली साबित हुईं। लेकिन ग्लोरिया ने इस होटल का नाम क्यों नहीं बताया? उसने उसे एक और पता दिया था, जो अब उसे याद नहीं था। वह गायब हो चुका था। लेकिन उसने फ़रीदी को पता नोट कर दिया था। फिर

फ़रीदी क्या कर रहा था? हमीद बहुत देर तक ऊपरी मंज़िल के गलियारे में खड़ा सोचता रहा। उसी रात फ़रीदी ने उसे तीन काम सौंपे, और उसने उस समय अपना काम कर दिया था। यानी, इस होटल के काउंटर पर मेंढकों का पिंजरा रखना। प्रतिक्रिया का इंतज़ार करना।

******

ठीक तीन बजे हमीद ग्लोरिया के बताए पते पर पहुँचा। वह भी साथ आना चाहती थी , लेकिन उसे बड़ी सख्ती से रोका गया।

इमारत के पंद्रहवें फ्लैट का दरवाज़ा बाहर से बंद नहीं था। हमीद को लगा कि शायद कोई अंदर है। उसने खटखटाने के ख्याल से दरवाज़े पर हाथ रखा और दरवाज़ा खुल गया, यानी अंदर से बंद नहीं था। अंदर अँधेरा था। हमीद ने टॉर्च जला दी।

पूरा फ्लैट सुनसान था। यहाँ तीन कमरे थे और तीनों का सामान बिखरा पड़ा था। कई जगह कागज़ों के ढेर भी दिखाई दे रहे थे। अचानक कदमों की आहट सुनकर हमीद चौंक गया।

"डरो मत, !" उसने फ़रीदी की आवाज़ सुनी। वह पास आया और बोला। "चोट हो गयी है। तुमसे बहुत देर हो गई। अगर ये दो दिन पहले किया गया होता, तो ये न होता... और अब हम फिर से अंधेरे में हैं।"

"हमारा नसीब कब उजाले में था ?" हमीद कराह उठा। उसे अपने जबड़े पर बना ज़ख्म याद आ गया। उसे वो गुब्बारा याद आ गया जिसका कड़वा, कसैला पानी उसके गले से नीचे उतर गया था।

"हाँ! शायद," फरीदी ने रूखेपन से कहा। "अरे, अब यहाँ क्या है? मैंने सब कुछ देख लिया है और अब मुझे समझ आ गया है कि लियोनार्ड ने रिकॉर्ड रूम से अपना ब्रीफ़केस क्यों चुराया था।"

हमीद कुछ नहीं बोला। वह उससे बहुत सारे सवाल पूछना चाहता था।

दोनों फ्लैट से बाहर चले गए, लेकिन अचानक हमीद को ऐसा लगा जैसे फरीदी अंधेरे में किसी पर झपट पड़ा हो।

नाच और लाउडस्पीकर

हमीद जहाँ था वहीं रुक गया। गलियारा अँधेरा था। फिर भी उसे पूरा यकीन था कि फ़रीदी वहाँ नहीं है। अचानक उसे थोड़ी दूर से गोलियों की आवाज़ सुनाई दी और अब उसे ख़तरा महसूस हो रहा था। उसके कदम तेज़ी से सीढ़ीयों की ओर बढ़ने लगे। आवाज़ ज़रूर नीचे से आई थी।

नीचे सन्नाटा था लेकिन उत्तर की ओर अंधेरे में, एक कार की पीछे की लाल बत्ती काफी दूरी पर दिखाई दे रही थी।

फिर उसने जो भी किया, बिना सोचे समझे किया । वह अपनी कार में बैठा और उस दिशा में गाड़ी चलाने लगा जहाँ कार की टेललाइट दिखाई दे रही थी। उसने धीरे-धीरे कार की गति बढ़ा दी।

अचानक लाल बत्ती गायब हो गई। हमीद उलटी दिशा में देखता रहा, पर न तो उसे अंदाज़ा हुआ कि आगे वाली गाड़ी अचानक किसी दिशा में मुड़ गई है, न ही उसे समझ आया कि आगे कोई ढलान है। बत्ती अँधेरे में ऐसे गायब हो गई मानो कभी थी ही न।

हमीद की कार की हेडलाइट की रोशनी सड़क पर दूर तक फैल रही थी।

उसने अपनी गति थोड़ी और बढ़ा दी।

तभी, कुछ पल बाद उसकी नज़र सड़क किनारे खड़ी एक कार पर पड़ी। हमीद ने अचानक अपनी गाड़ी धीमी कर दी।

लेकिन वह सोचने लगा कि उससे कुछ बेवकूफी होने वाली है। आखिरकार उसने गाड़ी रोकने का फैसला टाल दिया। उसने फिर से गति बढ़ाई और लगभग चार फ़र्लांग दूर चला गया।

356

उसने न केवल कार को कुछ दूरी पर रोक दिया, बल्कि इंजन भी बंद कर दिया।

उसका दाहिना हाथ रिवॉल्वर के हैंडल पर था।

पाँच मिनट भी नहीं बीते थे कि एक कार तेज़ी से वहाँ से निकल गई। यह वही कार थी जिसे हमीद ने सड़क पर खड़ी देखा थी। लेकिन इस बार उसमें अंदर बत्तियाँ जल रही थीं और एक औरत गाड़ी चला रही थी। एक पतली सी अंग्रेज़ औरत। बस एक नज़र ही उसे पहचानने के लिए काफी थी। वह मिसेज वरनार ही थी।

****

दूसरी रात लेडी प्रकाश अपनी एक सहेली के साथ हाई स्ट्रीट नाइट क्लब में दाखिल हुईं। वह पहले से भी ज़्यादा खूबसूरत लग रही थीं, और उनके चेहरे की शांति देखकर अंदाज़ा लगाना मुश्किल था कि वह इन दिनों मानसिक उलझन में हैं। कैप्टन हमीद ने प्रशंसा भरी नज़रों से उन्हें देखा। वरनार परिवार की सबसे खूबसूरत लड़की उनके सामने खड़ी थी,

उसने लड़की की तरफ़ देखा। वह भी उस औरत को मुस्कुराकर देख रही थी।

"मुझे साड़ी बहुत पसंद है," उसने हमीद के कान में धीरे से कहा।

"लेकिन तुम साड़ी में तो बिल्कुल भी खूबसूरत नहीं लगोगी ।" हमीद बड़बड़ाया।

"हंह!" उसने भौंहें सिकोड़ीं और दूसरी ओर देखने लगी।

"ओह, बुरा लगा? मैं तो बस तुम्हें चिढ़ा रहा था। तुम कहाँ और वो कहाँ ? पूरब और पश्चिम का फ़र्क़ है? लेकिन इस वक़्त मुझे अपने पापा की बुरी तरह याद आ रही है ।"

"क्यों, पापा, क्यों?" लड़की ने आश्चर्य व्यक्त किया।

"वे इस महिला को देखकर पागल हो जाएंगे।"

तुम अपने पापा के लिए .....बकवास कर रहे हो। श्श्श।

हमीद कुछ नहीं बोला। वह उस महिला को गौर से देख रहा था। जैसे ही वह हॉल में दाखिल हुई, शहर के कई गणमान्य लोग अपनी कुर्सियाँ छोड़कर उसके स्वागत के लिए आगे बढ़ आए।

"यह कौन है?" लड़की ने हमीद से पूछा।

" मुझे याद आ रहा है कि मैंने इसे पहले कहीं देखा था।"

357

"वह एक अमीर महिला लगती है।"

"होगी ," हमीद बोला। "वह तुमसे ज़्यादा सुंदर नहीं है।"

मनोरंजन कक्ष में नृत्य का संगीत बजना शुरू हो गया था। लड़की की एड़ियाँ संगीत पर थिरक रही थीं।

तार लय के अनुसार फर्श पर बजने लगे।

"आपका क्रिक स्टेप कैसा है?"

मेरा क्रिक स्टेप....!

हमीद अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाया था कि नाइट क्लब का मैनेजर उसके ऊपर झुककर कह रहा था, "यह रहा तुम्हारा फ़ोन।"

"फ़ोन ? हैं ।" हमीद चौंककर खड़ा हो गया। उसने लड़की से कहा, "मैं अभी-अभी आया ।"

हमीद मैनेजर के साथ अपने दफ़्तर में आया। रिसीवर मेज़ पर …..नीचे पड़ा था।

कौन....! दूसरी तरफ से आवाज़ आई।

"हमीद...कैप्टन हमीद।"

"आहा --कैप्टन साहब हैं ।" हमीद - हमीद ने फ़रीदी की आवाज़ पहचान ली। देखो।

" देखो कैप्टन। अभी वार्नर की लड़की को खिसका दो, और अगर तुम अभी लेडी प्रकाश को अपने साथ नहीं नचा सकते, तो मैं... कैप्टन... मैं तुमसे क्या कहूँ, मैं तुमहें क्या समझने लगूँगा।"

"हाँ .. ठीक है... लेकिन आप कहाँ हैं?"

"बहुत करीब! इसकी चिंता मत करो।"

हमीद कुछ और कहना चाहता था, लेकिन दूसरी तरफ से संपर्क टूट गया था।

"यह लड़की बहुत खूबसूरत है, साहब। --नाइट क्लब के मैनेजर ने कहा। शायर के अनुसार...!

"अरे, मैनेजर ,... तुम होश में हो या नहीं? तुम मेरी लड़कियों पर नज़र रखते हो ? " हमीद ने आँखें घुमाते हुए कहा।

हे खुदा ! मेरा वो मतलब नहीं था। कमाल कर दिया ----... वाह... जैसा कि कवि कहते हैं।

"नहीं, मैं कविता सुनने के मूड में नहीं हूँ।" हमीद ने उसे कुर्सी पर धकेल दिया और कमरे से बाहर चला गया।

358

लड़की इसी का इंतज़ार कर रही थी। उसने हमीद के चेहरे पर चिंता के भाव देखे।

"क्या बात है?" उसने पूछा.

"ओह, मैं क्या कहूँ! मुझे नहीं पता कि क्या हो रहा है।

".....क्या हुआ?"

"मुझे नहीं पता कि पुलिस कुछ ही मिनटों में यहां छापा क्यों मारने जा रही है।"

"पुलिस छापा मारने वाली है। लड़की ने आश्चर्य से दोहराया।

हाँ, अभी फ़ोन आया था। पुलिस की रेड का मतलब है मेरी पूरी रात बर्बाद हो गई। पता नहीं कितने घंटे। सारे दरवाज़े बंद हो जाएँगे और किसी को भी बाहर जाने की इजाज़त नहीं होगी।

"ओह, तब ...तो फिर मुझे जाने दो।"

मैं अकेले बोरियत से मर जाऊँगा... वैसे भी मुझे रुकना ही पड़ेगा। नहीं, तुम नहीं जा सकती ।

"नहीं, कैप्टन! मुझे जाने दो। अगर मैं देर से पहुँची , तो मम्मी परेशान हो जाएँगी। मुझे दिल का दौरा पड़ जाएगा।"

"मैं कल फिर मिलूंगा... जहां भी तुम कहो।"

"अरलेकचनु में ... ठीक नौ बजे।"

लड़की खड़ी हो गई और हमीद बोला, "रुको, मैं भी चलता हूँ। वो लोग परिसर के गेट पर तुम्हें रोक देंगे ।"

हमीद उसे टैक्सी स्टैंड तक ले गया, जो क्लब से ज्यादा दूर नहीं था।

कल आरलक्चो में आना ज़रूर , वरना झगड़ा होगा।" हमीद ने टैक्सी का दरवाज़ा बंद करते हुए कहा।

"ज़रूर, ज़रूर....."

टैक्सी चली गई और हमीद गहरी साँस लेकर नाइट क्लब की ओर चल पड़ा। अब उसे लग रहा अब लेडी प्रकाश वहाँ नहीं थी , जहाँ हमीद उसे कुछ देर पहले छोड़ गया था।

लेकिन उसे यकीन था कि वह बाहर नहीं गई थी, क्योंकि टैक्सी स्टैंड से भी उसकी निगाहें ज्यादातर क्लब परिसर के गेट पर ही टिकी हुई थीं।

वह सीधा रिकरीएशन हॉल में गया। वहाँ तेज़-तर्रार जाँच-पड़ताल चल रही थी। उसने इधर-उधर देखा। आख़िरकार, गैलरी में , उसे वह महिला दिखाई दी।

वह एक मेज़ पर अकेली थी। गैलरी में ज़्यादातर मेज़ें खाली थीं, वरना हमीद उसके साथ बैठने का कोई अच्छा बहाना बना सकता था।
359

वह काँपते कदमों से गैलरी में दाखिल हुआ। उसके चेहरे पर एक अजीब सी उदासी छा गई। उसकी आँखों में उदासी के गहरे बादल छाए हुए थे।

उसने चारों ओर उत्सुकता भरी नज़र डाली।

टेबलें निश्चित रूप से खाली थीं, लेकिन उन सभी पर आरक्षण कार्ड लगे हुए थे।

हमीद लेडी प्रकाश के पास से गुज़रा और इधर-उधर देखने लगा, लेकिन उसने एक बार भी उसकी तरफ़ नहीं देखा। हालाँकि, लेडी प्रकाश ख़ुद उसे बड़े ध्यान से देख रही थीं।

हमीद ने पूरी गैलरी का चक्कर लगाया लेकिन उसे एक भी टेबल ऐसी नहीं दिखी जिस पर आरक्षण का कार्ड न लगा हो।

वापस आते हुए वह फिर लेडी प्रकाश के पास से गुजरा, लेकिन अब वह बुदबुदा रहा था, "कहीं नहीं... कहीं नहीं... आज तो मरने की भी जगह नहीं मिलेगी।"

लेडी प्रकाश ने उसकी हर बात ध्यान से सुनी और हैरानी से उसकी तरफ़ देखा। हमीद औरतों के लिए काफ़ी आकर्षक था।

उसने उसे गैलरी के दूसरे छोर तक जाते देखा। हमीद अंत में रुक गया। वह कुछ देर वहीं खड़ा रहा, दोनों हाथों से अपना चेहरा ढँक लिया। फिर वह तेज़ी से उस तरफ मुड़ा जहाँ लेडी प्रकाश बैठी थीं। संयोग से, वह गैलरी के उस हिस्से में बिल्कुल अकेली थीं।

हमीद शानदार अभिनय कर रहा था। अब उसके कदम तेज़ी से लेडी प्रकाश की मेज़ की ओर बढ़ रहे थे।

और फिर, उसके पास पहुँचकर वह एक पल के लिए रुक गया। वो बौखला गई

"मैं यहीं बैठना चाहता हूँ," हमीद ने एक हताश किसान की तरह कहा।

"बैठ जाइए," मैडम प्रकाश के मुँह से अनायास ही निकल गया।

हमीद झटके से बैठते हुए बोला, "शुक्रिया! आपके साथियों के आते ही मैं उठ जाऊँगा। ज़रा देखिए... सभी मेज़ों पर रिज़र्वेशन कार्ड रखे हैं। मेज़ें खाली हैं लेकिन किस से इजाज़त लूँ , मैं थोड़ी देर यहीं बैठना चाहता हूँ।"

"बिल्कुल, बैठ जाइए। लेडी प्रकाश जबरदस्ती मुस्कुराई। वह थोड़ी सहमी हुई सी लगने लगी थी। यह पहली बार था कि कोई अजनबी उससे इतनी बेबाकी से बात कर रहा था, वरना उसके रोज़मर्रा के मुलाक़ाती भी उससे बात करते हुए हकलाते थे, अजनबी की तो बात ही छोड़िए, लेडी प्रकाश जानती थी कि उसका अपना व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली है कि विपरीत लिंगी उसके सामने बिना हकलाए बात नहीं कर सकता ।

360

हमीद का लहजा भी ऐसा था जैसे उसे उसकी या उसकी खूबसूरती की ज़रा भी परवाह नहीं है।

"मैं तुम्हें बोर नहीं करूँगा।" हमीद ने कहा और डांस की ओर ध्यान देने लगा । तेज़-तेज़ स्टेप राउंड चल रहा था और पूरा हॉल कानफोड़ू संगीत से गूंज रहा था। हमीद फिर लेडी प्रकाश की ओर मुड़ा और बोला।
"राउंड खत्म होते ही मैं उठ जाऊँगा।"

"आप बैठ जाइए, साहब। महिला ने बड़े प्यार से मुस्कुराकर देखा । "मैं आपको उठने के लिए नहीं कह रही हूँ। मैं इस मेज़ पर अकेली ही हूँ।"

हमीद को हैरानी हुई कि उसकी सहेली कहाँ चली गई। और जब वह पहुँची, तो कई आदमी उसका स्वागत करने के लिए खड़े थे, लेकिन अब वह मेज़ पर अकेली थी।

"शुक्रिया..." हमीद ने बेपरवाही से कहा और फिर डांस की ओर ध्यान देने लगा। लेकिन लेडी प्रकाश उसे अजीब नज़रों से देख रही थी।

ये क्रिक स्टेप है। -- हमीद ने मुँह बनाते हुए कहा। जैसे चंद घसीआरे पैरों में खुरपियाँ बांध कर घास छील रहे हैं। ---फिर वह महिला की ओर मुड़ा और गुस्से वाले लहजे में बोला।

"ये लड़कियाँ गधों के साथ नाच लेंगी, मेरे साथ नहीं। तुम खुद बताओ! कोई आदमी भी ऐसा दिखा है जो सलीके से नाच रहा हो "

आपका विचार बिल्कुल सही है। इसीलिए मुझे अकेले बैठना पसंद है। महिला बोली।
कार्यक्रम की एक प्रति मेज़ पर रखी थी, हमीद उसे पलटने लगा।
"यहाँ," उसने मज़ाकिया लहजे में कहा। "वाल्ट्ज़ और स्लोफ़ॉक्स ट्रूप्स भी हैं। कमाल है... भला यहाँ कौन है?"

आप बहुत मज़ाकिया लग रहे हैं। महिला ने संजीदगी से कहा

"नहीं, मैं यह दावा नहीं कर सकता... लेकिन कृपया मुझे बताएं कि क्या मैं सूरत से असभ्य या बुरा व्यक्ति दिखता हूं।"

"नहीं साहब! बिल्कुल नहीं। लेकिन ---मैडम प्रकाश ने तारीफ़ में कहा ।

"तो फिर ये लड़कियाँ मेरे साथ नाचना क्यों पसंद नहीं करतीं?" हमीद ने बिगड़े हुए बच्चे की तरह कहा।

लेडी प्रकाश ने इस सवाल का जवाब नहीं दिया। वह खुद इस सवाल पर गंभीरता से विचार करने लगी थीं कि लड़कियाँ उनके साथ डांस करना क्यों पसंद नहीं करतीं।

हमीद ने कठोर स्वर में कहा, "मैं खुद अब किसी से कुछ नहीं पूछता।"

"आप क्या पीना चाहेंगे?" लेडी प्रकाश ने पूछा।

"ठंडा पानी। मुझे ज़रा सी बात पर गुस्सा आ जाता है।"

"आपको कौन सी शराब पसंद है?"

"मुझे किसी भी तरह की शराब पसंद नहीं है।"

अब मुझे समझ आ गया।--- लेडी प्रकाश अपनी ख़ास मुस्कान के साथ बोलीं। "इसीलिए लड़कियाँ तुमसे दूर भागती हैं।"

"क्यों?"

"ऐसा इसलिए है क्योंकि आपकी बातचीत का अंदाज़ बहुत रूखा है।"

हमीद कुछ नहीं बोला। डांस खत्म हो गया। लोग गैलरी में अपनी-अपनी मेज़ों पर लौट आए। लेडी प्रकाश ने वेटर से कॉफ़ी माँगी। आस-पास और दूर-दूर तक फैली कई मेज़ों से, लेडी प्रकाश के कई परिचित हमीद को बुरी नज़र से घूर रहे थे।

उनमें से कई ऐसे थे जिन्हें उसने कुछ समय पहले नृत्य करने का अनुरोध करके निराश किया था।

लेडी प्रकाश ने हमीद के लिए कॉफी डाली और धीमी आवाज़ में कहा, "उसके बाद...वाल्ट्ज़ के लिए संगीत शुरू होगा, फिर मैं देखूँगी कि तुम्हें कितना अच्छा नाचना आता है।

"क्या मैं अकेला नाचूँगा ? हवा को अपना साथी बना लूँगा," हमीद ने आँख मारते हुए कहा।

"नहीं, -- लेडी प्रकाश मुस्कुराई और बोली । "वैसे, मैं भी यही दावा करती हूँ। कि मैं वॉल्स बहुत अच्छा नाचती हूं।"

ठीक है...मैं देखूँगा। लेकिन ध्यान रहे कि मेरा डांस पार्टनर अक्सर गलती कर देता है। और बुलबुला उठता है।”

".....क्यों

"मैं उसके पैरों पर बड़ी बेदर्दी से पैर रख देता हूँ।"

"चिंता मत करो। मैं भी गलती करने वालों की पिंडलियों पर लात मारती हूँ।"

"अच्छा... देखते हैं हम दोनों में से कौन सही है।" हमीद बच्चों की तरह हंस पड़ा ।

थोड़ी देर बाद, वाल्ट्ज का संगीत शुरू हुआ, लोग गैलरी से उठने लगे, और लेडी प्रकाश का एक परिचित उनसे अनुरोध करने ही वाला था कि वह हमीद का हाथ थामे खड़ी हो गईं। एक बार फिर, हॉल में जीवन की लहर दौड़ गई।

दूसरी ओर गैलरी में एक आदमी अपने साथी से पूछ रहा था, "यह महिला किसके साथ नाच रही है?"

"कैपटेन हमीद... उसका साथी मुझसे मुखातिब हुआ, "बूढ़े औरतबाज़! शायद तुमने लेडी प्रकाश से भी डांस का अनुरोध किया था।"

" ओहो , खत्म भी करो यार।" दूसरे ने कहा। "इन बातों की परवाह किसे है? क्या मतलब है? अच्छी औरतें मेरे साथ नाचने में गर्व महसूस करती हैं, और फिर शायद आज उसका मूड ठीक नहीं था।"

उधर लेडी प्रकाश हमीद से कह रही थी, "तुम सचमुच मज़ाकिया हो। मैं मानती हूँ।

"और मुझे भी यह कहना पड़ रहा है कि मुझे तुम्हारे पैरों पर पैर रखने का मौका नहीं मिल रहा ।"

"आप कहाँ रहते हैं?"

"मैं जहाँ भी मेरा दिल चाहता है, वहीं रहता हूँ।"

अचानक लाउडस्पीकर पर चिल्लाने लगा: "लेडी प्रकाश, कृपया आयी , फोन पर आपकी काल आई है ।आवश्यक है।"

लेडी प्रकाश झटके से हमीद से अलग हो गईं, मानो यह संदेश उनके बीच में तलवार बन कर गिरा हो ।

सोचा कुछ हुआ कुछ

हमीद ने लेडी प्रकाश के मूड में ज़बरदस्त बदलाव देखा। उसके चेहरे पर मानसिक उलझन के निशान दिखने लगे थे।

"क्या मतलब .." हमीद ने उसकी आँखों में देखते हुए कहा।

"यह मेरा कॉल है।"

"यह बेवकूफ कौन है जो यहाँ फोन कर रहा है? सारा मज़ा किरकिरा हो गया ।"

"मैं अभी आ रही हूं।”

"नहीं... मैं अब और नहीं नाचूंगा ।"

मैं अभी आई ।लेडी प्रकाश जल्दी से चली गई ।

मैनेजर दफ़्तर के सामने उसका इंतज़ार कर रहा था। उसे देखते ही उसने थोड़ा झुककर प्रणाम किया।

363

"मैडम आपका फोन है ।

शुक्रिया... देखती हूँ । महिला उसके ऑफिस में घुस गई

वह अंदर गई और दरवाज़ा बंद कर लिया। रिसीवर उठाते हुए उसका हाथ ज़ोर से काँप रहा था।

हैलो , लेडी प्रकाश--। दूसरी तरफ से आवाज़ आई। "टेम्स नदी की मछली।"

अरे... तुम हो! मुझे कहीं आराम नहीं करने दोगे?

"तुम हरकतें ही ऐसे कर रही हो। अभी तुम किसके साथ नाच रहे थे?"

मैंने उसका नाम तो नहीं पूछा।"

लेडी प्रकाश... कान खोलकर सुन लो... मैं अपनी माँग हर हाल में पूरी करूँगा, चाहे तुम किसी से भी जोड़ तोड़ कर लो। कोई मुझ तक नहीं पहुँच सकता। ज़रूरत पड़ी तो मैं तुम्हें मार भी दूँगा।

मैं समझ नहीं पा रही कि आप क्या कह रहे हैं।

"ठीक है, ख़त्म करो।" दूसरी तरफ़ से कड़वे स्वर में कहा गया। "बात तो ऐसे ही कह दी। मैं अब और इंतज़ार नहीं कर सकता। वैसे, इस शहर में एक आदमी है जो ये चीज़ें चार लाख में भी खरीद लेगा।"

"देखो, मुझे बस एक हफ़्ते का वक़्त दो, मैं इंतज़ार कर रही हूँ।"

कैप्टन हमीद और कर्नल फ़रीदी भी इस इंतजाम में शामिल हैं।--- दूसरे पक्ष से व्यंग्यात्मक लहजे में पूछा गया,

 "आप क्या कह रहे हैं? मैंने तो बस दोनों के नाम सुने हैं। आज तक मिलने का कोई समय नहीं हुआ है। ज़रूर आप ग़लतफ़हमी में हैं।"

"लेडी, मुझे ज़िद्द मत दिलाओ , वरना मैं आपकी ज़िंदगी बर्बाद कर दूँगा। क्या ये झूठ है कि आप अभी कैप्टन हमीद के साथ डांस कर रही थीं और वो अभी भी एंटरटेनमेंट हॉल में आपका इंतज़ार कर रहे हैं?"

"वो कैप्टन हमीद हैं।" लेडी प्रकाश हैरानी से आँखें चौड़ी करके बोली।

मैं जानता हूं कि वे मुझ तक नहीं पहुंच पाएंगे, लेकिन कम से कम यह दुनिया आपके लिए नर्क बन जाएगी ।”

चाहे कुछ भी हो जाए, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मुझे सार्वजनिक जगहों पर फ़ोन न करें।

"लेडी प्रकाश आपको एक हफ़्ता और मिल जाएगा और यह आखिरी बार होगा ।" दूसरी तरफ़ से फ़ोन कट गया। लेडी प्रकाश ने रिसीवर हुक पर रखा और लड़खड़ाते हुए चली गईं।

364

उसके चेहरे पर पसीने की बूँदें उभर आई थीं।

उसने अपना वैनिटी बैग खोला, उसमें से एक दर्पण निकाला और पसीना पोंछते हुए जल्दी से अपना मेकअप ठीक करने लगी।

फिर वह दरवाज़ा खोलकर बाहर गई। मैनेजर वहाँ नहीं था।

मनोरंजन कक्ष अब शांत था। नृत्य-दौर समाप्त हो चुका था और नर्तकियाँ दीर्घा में थीं। उसने हमीद को अपनी मेज़ पर बैठे देखा।

हमीद को दूर से ही आभास हो गया कि उसके साथ कुछ असामान्य हुआ है, हालाँकि वह अपनी घबराहट को मुस्कुराहट से छिपाने की कोशिश कर रही थी, उसकी आँखें अभी भी मानसिक उथल-पुथल का संकेत दे रही थीं। उसने एक गहरी साँस ली और बैठ गई।

"आपने बुरा तो नहीं माना । उसने हमीद से पूछा।

ऐसी बातें कहना वाकई मुश्किल होता है।"

"ओह, मुझे माफ़ करना। यह बहुत ज़रूरी कॉल थी।"

लेडी प्रकाश ने गहरी आवाज़ में यह वाक्य कहा। हमीद बोलते हुए सीधे उसकी आँखों में देख रहा था। इसलिए उसे तुरंत ही उस हल्के बदलाव का एहसास हो गया।

कुछ देर तक सन्नाटा रहा, फिर उस महिला ने कहा , "तुमने आज तक मुझे अपने बारे में कुछ नहीं बताया।"

हमीद ने जवाब दिया, "न ही मैंने अभी तक आपके बारे में पूछा है।"

आप कौन हैं, क्या करते हैं... और...

"तुम कहाँ रहते हो? हमीद ने अपनी बात पूरी की। "मैं इस समय ड्यूटी पर नहीं हूँ। वरना मैं तुम्हें कभी नहीं बताता कि मैं कैप्टन हमीद हूँ। तुमने नाम तो सुना ही होगा... और मैं ख़ुफ़िया विभाग से हूँ।"

लेडी प्रकाश उसकी स्पष्टवादिता से हैरान रह गईं। मेजर के ऑफिस से लौटते हुए, वह सोच रही थीं कि अगर वह कैप्टन हमीद हैं, तो ज़रूर मेरी नज़रों से बचेंगे और अपनी असली पहचान कभी नहीं बताएँगे।

हमीद ने भी उसमें यह बदलाव देखा और उसका ध्यान तुरंत उस फ़ोन कॉल की ओर गया जिसे सुनकर लेडी प्रकाश घबराकर उससे दूर चली गई थी। वह सोच रहा था कि क्या यह फ़ोन लियोनार्ड का था? वह उसके तौर-तरीकों से वाकिफ़ था। वह खुद ही उसका शिकार था।

वह उसे जितना हो सके डराने की कोशिश करता है। हो सकता है उसने उसे फ़ोन पर बता दिया हो कि वह इस समय हमीद के साथ है।

"मैंने आपका नाम सुना है।" लेडी प्रकाश ने रूखे स्वर में कहा। "इस तरह परिचय कराने का कोई ख़ास मक़सद था क्या?"

"हाँ," हमीद ने उसकी आँखों में देखते हुए जवाब दिया।

और लेडी प्रकाश के चेहरे पर एक छाया छा गई, लेकिन उनकी आँखों में भ्रम दिखाई देता रहा।

"इसका मतलब क्या था? लेडी प्रकाश ने स्वर को कठोर बनाने की कोशिश की।

"मतलब पूरा हो गया।" हमीद मुस्कुराया और बोला। "इस समय मैं दो हज़ार की शर्त जीत गया हूँ।" "..... यही है।"

एक दोस्त ने कहा था कि आज काश, आज लेडी प्रकाश किसी के नाचने का अनुरोध स्वीकार न करेंगी । मूड बहुत खराब है। बात बढ़ गई। बात दो हज़ार की शर्त पर ख़त्म हुई और दो हज़ार मेरे हो गए । मैं आपका आभारी हूँ।"

हमीद अपनी कुर्सी से उठा, आश्चर्य से थोड़ा झुका और एक सैनिक की तरह अपनी दाहिनी एड़ी पर घूम गया। और हॉल से बाहर चला गया।

****

जासूसी विभाग कुछ समय से लियोनार्ड की तलाश में था। फ़रीदी को अपने हाल पर छोड़ दिया गया था और हमीद को आधिकारिक तौर पर एक ऐसे समूह के साथ काम करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी जिसमें इंस्पेक्टर आसिफ भी शामिल था। आदेश डीआईजी के दफ़्तर से आए थे, इसलिए हमीद को चैन की साँस नहीं मिली। वरना आसिफ जैसे लोगों से निपटना

उसके बस की बात नहीं थी और विडंबना यह थी कि आसिफ को उसकी वरिष्ठता के कारण इस समूह का प्रभारी बनाया गया था।

आसिफ फरीदी और हमीद का पुराना दुश्मन था। उसके देखते देखते ही दोनों ज़मीन से आसमान पर पहुँच गए। आसिफ इंस्पेक्टरों में सबसे सीनियर था, लेकिन अपनी ज़ीरो परफॉर्मेंस की वजह से अफसरों की नज़रों में उसकी कोई कद्र नहीं थी। लेकिन इस बार अपने लिए सम्मानजनक प्रमोशन देखकर उसे ज़्यादा देर तक यकीन नहीं हुआ। अपने मातहतों में हमीद का नाम देखकर उसकी आँखें चौड़ी हो गईं। सबसे पहले उसने हमीद को पुकारा।

"... हमीद"

कैप्टन हमीद... हमीद ने सही किया ।

"मुझे अशिष्टता पसंद नहीं है।"

कैप्टन हमीद ने एक-एक शब्द पर ज़ोर देते हुए कहा, "अगर अब आप मुझे सिर्फ़ हमीद कहेंगे, तो मैं आपके ख़िलाफ़ मानहानि का दावा ठोक दूँगा। समझ लीजिए, साहब। मुझे डी.आई.जी. भी ऐसे नही बुलाते ।सब कैप्टन कहकर संबोधित करते हैं।"

फरीदी कहाँ है?

"सुभान अल्लाह! क्या यह भी मेरे फ़र्ज़ में शामिल होगा?" हमीद ने मुँह बनाते हुए कहा।

"तुम्हें मुझे ज़रूर बताना होगा कि फ़रीदी कहाँ है।" बताओ मुझे।

कर्नल फ़रीदी: "हमीद ने फिर सही किया ।"

"अच्छा, मैं तुम्हें देखूंगा।"

"आप मुझे दिन में ही देखेंगे, मैं आमतौर पर रात में नहीं दिखता।

"यू शट अप "

" आसिफ साहब, मैं तुम्हारी गर्दन पकड़कर खिड़की से बाहर फेंक दूँगा। मुझे कप्तान का सम्मान इसलिए नहीं मिला क्योंकि इंस्पेक्टर मुझे धमकाते फिरें । तुम्हें हमारा इंचार्ज बनाया गया है। बने रहो। लेकिन यह भी तभी होगा जब तुम गरिमा से पेश आओगे।"

"मैं तुमसे बात नहीं करना चाहता.... यहाँ से चले जाओ।"

"शुक्रिया।" हमीद कमरे से बाहर चला गया।

उसी शाम, आसिफ ने उसे किवास होटल की निगरानी पर नियुक्त कर दिया। उसे पूरी रात किवास होटल के मुख्य द्वार पर पहरा देना था। लेकिन इसे चमत्कार ही कहेंगे कि हमीद वार्नर की प्रेमिका के साथ होटल डी फ्रांस में बारह बजे तक नाचता रहा, फिर घर जाकर सो गया।

अगली सुबह उन्होंने आसिफ को जो लिखित रिपोर्ट सौंपी वह यह थी।

'शाम 6 बजे से सुबह 4 बजे तक होटल के मुख्य द्वार की निगरानी करता रहा । रात 8 बजे तक कुछ खास नहीं हुआ। मैं होटल बंद होने तक किसी लड़की के आने का इंतज़ार करता रहा। लेकिन एक भी लड़की वहाँ जाती नहीं दिखी। इससे यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि लड़कियाँ वहाँ नहीं जातीं और यह एक थर्ड क्लास होटल है। होटल बंद होने के बाद भी मैं मुख्य द्वार की निगरानी करता रहा और भगवान का शुक्र है कि

"सदर दरवाजा अभी भी अपनी जगह पर है, मेरी व्यक्तिगत राय है कि सदर दरवाजे से अच्छे आचरण की गारंटी मांगनी चाहिए।"

आसिफ ने यह संक्षिप्त रिपोर्ट देखी... और वह गुस्से से आग बबूला हो गया।

यह क्या है? वह थोड़ी देर बाद गला फाड़ कर चिल्लाया। "मैं इसे एसपी के सामने पेश करूँगा।"

"ज़रूर... शायद इस काम के लिए मुझे प्रमोशन मिल जाए।" हमीद ने बहुत गंभीरता से कहा।

"और आपका आदेश मेरे पास सुरक्षित है। उसमें सिर्फ़ इतना लिखा है कि मैं पूरी रात किवास के मुख्य द्वार पर निगरानी करूँ । तो मैं पहरा दे रहा था। मैं ठीक चार बजे घर लौटा। मुझे पहरा देने का मक़सद कुछ पता नहीं था, इसलिए अपनी समझ के अनुसार यह रिपोर्ट तैयार करके आपके सामने पेश करने का गौरव महसूस कर रहा हूँ।"

आसिफ ने झल्लाते हुए कहा, "निगरानी टीम को छापे के उद्देश्य की जानकारी नहीं थी।"

"बिल्कुल नहीं....जनाब इंस्पेक्टर साहब ।"

"क्या कुछ दिन पहले किवास में एक हत्या नहीं हुई थी और आश्चर्य की बात है कि आप वहां पहले से ही मौजूद थे?"

"चलो... ठीक है अब मुझे याद आ गया... लेकिन दरवाज़े पर पहरा देने का क्या मतलब था?"

"मैं आज रात ध्यान रखूँगा और कल जवाब दूँगा।" हमीद ने लापरवाही से कहा और सिपाहियों की तरफ़ देखा।

वह अपनी एड़ियां चटकाते हुए, शानदार अंदाज में कमरे से बाहर चला गया।

उस समय कमरे में आसिफ और अनवर के अलावा कोई और मौजूद नहीं था, वरना आसिफ को बहुत शर्मिंदगी उठानी पड़ती।

उसने हमीद की रिपोर्ट लेकर उसे फाड़ डाला। किसी न किसी बहाने से उसने इस घटना को आगे बढ़ाया होगा। यह मूर्खता उसकी अपनी ही करतूत थी। उसने हमीद को लिखित आदेश दिया था कि वह होटल के मुख्य द्वार पर पहरा दे, लेकिन उसमें यह नहीं लिखा था कि उसका उद्देश्य क्या था। अगर वह इस मामले को आगे बढ़ाता, तो उसे शर्मिंदगी उठानी पड़ती।

वैसे, इस कदम का मकसद हमीद को परेशान करने के अलावा और कुछ नहीं था। हमीद ने यह भी तय कर लिया था कि अगला और आखिरी हिसाब इसी बार तय किया जाएगा।

शाम को दफ्तर से निकलते समय उसे लगा कि आसिफ उसके ठीक पीछे है और यह सच था कि आसिफ आज भी हमेशा की तरह हमीद के पीछे-पीछे चल रहा था।

हमीद लिटिल ऑस्टिन में था, इसलिए आसिफ को टैक्सी लेनी पड़ी और हमीद ने फैसला किया

कि आज टैक्सी ड्राइवर को काफ़ी फ़ायदा पहुचाए बिना नहीं रहेगा । उसने होटेल पर रुककर जल्दी से नाश्ता किया। आसिफ उस समय कमाल का हुनर दिखा रहा था।

जब हमीद वेटर को नाश्ते के लिए निर्देश दे रहा था, वह तेज़ी से डाइनिंग हॉल में घुसा और पास के एक केबिन में घुस गया। हमीद ने उसे घूर कर देखा।

वहाँ उसने सात बज दिए । उसने काउंटर क्लर्क के साथ कुछ देर तक फ़्लर्ट किया। फिर वार्नर की लड़की आ गई क्योंकि इन दिनों वे इसी होटल में मिल रहे थे।

सात बजे वे वहाँ से निकले। आसिफ भी केबिन से बाहर आ गया। हमीद की गाड़ी शहर की गलियों में चक्कर लगाने लगी।

क्या बात है? लड़की बोली । "आज तुम होटल में रुके नहीं ,

"रोज़ाना एक जैसा ही मनोरंजन मज़ा नहीं आता । आज कुछ अलग देखेंगे ।"

गाड़ी सड़कों पर चक्कर लगाती रही और आसिफ टैक्सी लेकर उसके पीछे-पीछे चल रहा था। उसे यकीन था कि हमीद को फ़रीदी का पता ज़रूर चल जाएगा और वह दिन में कम से कम एक बार उससे ज़रूर मिलेगा। अगर उसे इस तरह फ़रीदी का पता चल गया, तो यह भी उसके लिए एक बड़ी कामयाबी होगी क्योंकि डी.आई.जी. फ़रीदी को हर हाल में ढूँढ़ना चाहता था।

आठ बजे हमीद ने एक बार के सामने गाड़ी रोकी और लड़की से इंतज़ार करने को कहा, और बाहर निकल गया। शराब खाने में घुस गया । आसिफ को कुछ सोचना पड़ा। उसने थोड़ी दूर पर टैक्सी रोकी। हमीद बार में घुस चुका था।

थोड़ी देर बाद वह बार से बाहर निकला और वापस कार में बैठ गया।

"क्या करते फिरते हो तुम .. ?

अब मैं कहीं नहीं रुकूँगा," हमीद ने कहा और कार स्टार्ट कर दी।

आसिफ की टैक्सी फिर से उसका पीछा कर रही थी। इस बार हमीद ने अपनी कार उस सड़क पर डाल दी जो तार जाम की ओर जाती थी।

"तुम कहाँ जा रहे हो?" लड़की ने घबराए हुए स्वर में कहा। वे शहर से बाहर आ गए थे।

"परवाह नहीं।
"
नहीं चलो वापस चलते हैं

पीछे देखो," हमीद ने कहा। "एक गाड़ी आ रही है। उसमें एक औरत है जिसे मैं चाहता हूँ।

369

"वह शादी करना चाहती है। मैं उसे बेवकूफ़ बनाना चाहता हूँ।"

लड़की ने पलटकर देखा।

हां हां। "

"देखते रहो। थोड़ा आगे जाकर हम अचानक मुड़ेंगे और फिर मज़ा आएगा।"

"कितना मज़ा आएगा। मुझे नहीं पता तुम क्या कह रहे हो।"

“:वो औरत। "हमीद ने ठंडी साँस ली और बोला। --वो ज़बरदस्ती शादी करना चाहती है। इसीलिए मैं शाम चार बजे से उसका पेट्रोल फुँकवा रहा हूँ। गाड़ी उसकी नहीं, टैक्सी है। उसका मीटर अब तक कम से कम पचास-पचपन मील चल चुका होगा।"

हमीद ने अपनी बात पूरी की और कार घुमाकर शहर की ओर चल पड़ा। सामने से आ रही कार ज़्यादा दूर नहीं थी। अचानक, उसने अपना रुख मोड़ा और हमीद का रास्ता रोक लिया। अगर हमीद ने तुरंत ब्रेक न लगाए होते, तो दुर्घटना निश्चित थी। लड़की का सिर डैशबोर्ड से टकराने से बाल-बाल बचा, और उसके मुँह से एक धीमी चीख निकल गई।

हमीद ने देखा कि तीन-चार आदमी उसके सामने वाली कार से कूद पड़े और उसे देखते ही उन्होंने हमीद की कार को घेर लिया।

"तुम दोनों हाथ ऊपर करो और चुपचाप बाहर आ जाओ," किसी ने चिल्लाकर कहा, और टॉर्च की रोशनी उन दोनों पर पड़ी। हमीद अपने हाथ जेब तक नहीं ले जा सका , क्योंकि उसकी पेशानी पे नाल लग गई थी ।

"बाहर निकलो।" तीन में से एक ने कर्कश स्वर में कहा।

हालांकि, कुछ ही क्षणों में हमीद को यह स्पष्ट हो गया कि वह मुसीबत में है, क्योंकि उसे बांध दिया गया था, उसके हाथ-पैर बंधे हुए थे, और लड़की पास में खड़ी होकर कांप रही थी।

मिस्टर बार्न

फ़रीदी की तरह हमीद भी विभाग के लिए गायब हो गया। दो दिन हो गए, लेकिन कहीं भी उसका पता नहीं मिला । आसिफ तो पहले ही जला भुना बैठा था , उसने वो वो ज़हर उगल की खुदा खैर करे ।

दो दिन पहले जब वह हमीद का पीछा कर रहा था तो उसे शहर में ही उसे छोड़ना पड़ा था ।

एक बार उसने टैक्सी ड्राइवर से पूछा कि उसने कितने मील की यात्रा की है, और फिर जवाब में "तीस माइल्स" सुनकर उसे अपना बटुआ याद आया, जिसमें यात्रा का खर्च उठाने लायक पैसे नहीं थे। उसे उसका पीछा करने का विचार छोड़ना पड़ा। जब हमीद गायब हुआ, तो उसने विभाग को बताया कि उसे एक अंग्रेज लड़की के साथ तारजाम की ओर जाते देखा गया था।

तीसरे दिन, श्रीमती वार्नर ने अपनी बेटी की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई, यह संदेह करते हुए कि कैप्टन हमीद ने उसका अपहरण कर लिया है। आसिफ का मुँह खुला का खुला रह गया, क्योंकि उसने अपनी रिपोर्ट में एक अंग्रेज़ लड़की का भी ज़िक्र किया था।

उस शाम के अखबारों ने अपहरण की सनसनीखेज खबर को नए अंदाज में छापा और हॉकरों ने इसे आसमान तक पहुंचा दिया।

****

ग्लोरिया अभी भी फ़रीदी की कोठी में रह रही थी। उसने भी अपहरण की खबर पढ़ी और अपना सिर हाथों में थाम लिया। उसने सचमुच हमीद से बहुत उम्मीदें लगा रखी थीं। उसे समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करे। वहीं रहे या चली जाए। कोठी के नौकरों की आँखों में उसे अपना उपहास नज़र आने लगा।

आखिरकार, उसने फैसला किया कि उसे वहाँ से निकल जाना चाहिए... जिस आदमी ने उसे इस मुसीबत में डाला था, उसकी उसी होटल में हत्या हो चुकी थी। इसलिए अब, जहाँ तक उसे पता था, उसे कोई खतरा नहीं था।

उसने एक बूढ़े नौकर से अपनी मंशा ज़ाहिर की, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। वजह यह थी कि नौकरों को इस बारे में कोई आदेश नहीं दिया गया था।

खैर, उसने अपना सूटकेस उठाया और चली गई। नौकरों ने उसे जाते देखा, पर कोई आश्चर्य नहीं जताया।

****

मिसेज वार्नर नींद में बेखबर सो रही थी । अचानक उसने शोर सुना और आँखें खोलीं। उसकी दोनों बेटियाँ शायद उससे पहले जाग गई थीं।

ये गोलियों की आवाज़ें थीं और ऐसा लग रहा था जैसे ये पास से आ रही हों। इनके साथ-साथ, लोगों के चीखने-चिल्लाने की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी।

371

वह डर के मारे बरामदे में आ गई।

और फिर सच्चाई सामने आने में ज़्यादा समय नहीं लगा। पुलिस ने मिस्टर बार्न के बंगले पर छापा मार दिया था।

अंदर से भी गोलियों की आवाज़ें आ रही थीं। मिसेज वार्नर चौंक गईं और कुछ कदम पीछे हट गईं। कुछ पल वहीं खड़ी रहीं।

फिर घबराई हुई आवाज़ में अपनी लड़कियों से बोली।

"आओ, अन्दर आओ," वह उन्हें अन्दर जाने के लिए धक्का देने लगी।

"क्यों...क्या हो रहा है?"

“अंदर जाओ, अपने कमरे में ।”

उसने उन्हें अंदर धकेल दिया और दरवाज़ा बंद कर दिया, और बुदबुदाई ,

"भगवान मुझ पर दया करें।" फिर लड़कियों की ओर मुड़कर उसने कहा, "अपने कमरे में जाओ।"

दोनों लड़कियाँ चली गईं।

मिसेज़ वार्नर का चेहरा पीला पड़ गया था और उनकी छाती लोहार की धौंकनी की तरह फूल रही थी। उन्होंने अपनी छाती पर हाथ रख लिया । कुछ देर तक वो इसी हालत में रही ।

लेकिन मानसिक उथल-पुथल बढ़ती ही रही।

अचानक गोलियों की आवाजें बंद हो गईं और ऐसा लगा जैसे कुछ संघर्ष के बाद उस की मृत्यु हो गई हो ।

मिसेज़ वार्नरसोफ़े पर बैठ गई । उसके पैर बुरी तरह काँप रहे थे।

तभी उसने अपने बरामदे पर भारी कदमों की आवाज सुनी तो वह उछल पड़ी।

कोई बाहर घंटी बजा रहा था। वह महिला वहीं निश्चल बैठी थी।

घंटी तीन-चार बार बजी, फिर दरवाज़ा ज़ोर-ज़ोर से खटखटाने लगा। मिसेज़ वार्नर ने खुद को संभालने की कोशिश की।

"कौन है?" काफी प्रयास के बाद वह अपने गले से गुस्से से भरी आवाज निकालने में कामयाब रही ।

"पुलिस," बाहर से आवाज़ आई। "दरवाज़ा खोलो।"

वह आगे बढ़ी और दरवाज़ा खोला। फ़रीदी उसके सामने खड़ा था। उसके बाल माथे पर बिखरे हुए थे, और उसके चेहरे पर दो गहरी खरोंचें थीं।

जिससे खून बहकर जम गया था।

372

खेल ख़त्म हो गया है, मिसेज़ वार्नर.... उसने मुस्कुराते हुए कहा।

"कैसा खेल.... आप कौन हैं?"

"तुम मुझे अच्छी तरह जानती हो...और यह खेल तुम्हारे लिए नया नहीं है। वार्न के हथकड़ियाँ लग चुकी हैं

क्यों.....? मिसेज़ वार्नर ने कहा , मिसेज़ वार्नर आश्चर्यजनक रूप से साहसी होती जा रही थीं।- क्या किया उसने ?

उसे अफ़सोस है कि वह कुछ नहीं कर सका।

"मैं समझ नहीं पा रही हूँ कि तुम क्या कह रहे हो।"

मैं हिब्रू या लैटिन में नहीं बोल रहा हूँ। फ़रीदी ने रूखे स्वर में कहा और फिर पीछे खड़े सब-इंस्पेक्टर की ओर मुड़कर कहा। इसे भी कोतवाली ले चलो। यह लियोनार्ड की एजेंट है ।"

"नहीं, वह जोर से चीख कर बोली - । मैं किसी लियोनार्ड को नहीं जानती ।"

"यह नाम शायद आपके लिए भी नया होगा।"

"नहीं नहीं , मैं किसी लियोनार्ड को नहीं जानती ।"

"ऑफीसर , इसे हिरासत में ले लीजिए," फरीदी ने सब-इंस्पेक्टर से कहा और उसने बेरहमी से हथकड़ियाँ पहना दीं ।

"ये सब क्या हो रहा है? मिसेज़ वार्नर तो मानो पागल हो गईं।

"क्या हो रहा है?क्या तुम लियोनार्ड को नहीं जानती ?" फरीदी ने शांत स्वर में पूछा।

नहीं, नहीं, नहीं।"

अच्छा --. फ़रीदी ने इधर-उधर देखते हुए कहा। फिर वह एक अलमारी की ओर बढ़ा। उसने उसे खोला और एक वैनिटी बैग निकाला। वह मिसेज़ वार्नर का ही था। फ़रीदी ने उसे खोला और मेज़ पर उल्टा करके रख दिया।

और फिर उसने गिरी हुई वस्तुओं के बीच से एक विजिटिंग कार्ड उठाया और उसे श्रीमती वार्नर के चेहरे के समाके कर दिया ।

"यह क्या है?"

बिजनेस कार्ड पर केवल बड़े अक्षरों में "लियोनार्ड" लिखा था।

मिसेज़ वार्नर ने अपने हाथ-पैर डाल दिए। अगर सब-इंस्पेक्टर ने अपना दाहिना हाथ आगे न बढ़ाया होता, तो वह...नीचे गिर जाती .

वो बेहोश हो गई थी .

373

शायद ही कोई ऐसा अख़बार हो जिसके उस दिन दो संस्करण न छपे हों। लियोनार्ड की गिरफ़्तारी। उस दिन हॉकर्स एक ही शीर्षक पर चिल्ला रहे थे... सभी अख़बारों ने बार्न... और मिसेज़ वार्नर की तस्वीरें छापी थीं और पूरी ख़बर में सबसे दिलचस्प मज़ाक यह था कि मिसेज़ वार्नर और लियोनार्ड के बीच कोतवाली में मारपीट की नौबत आ गई थी। बार्न ने इनकार किया कि वह लियोनार्ड है और पागलों की तरह चिल्ला रहा था कि वह लियोनार्ड नहीं है और मिसेज़ वार्नर के वैनिटी बैग से फरीदी को जो विज़िटिंग कार्ड मिला था, वह भी उसका नहीं था। मिसेज़ वार्नर चीख चीख कर कह रही थी की वही लियोनार्ड है और जो विज़िटिंग कार्ड मिला था, वह भी उसका ही था।

अखबारों ने यह भी बताया कि कैप्टन हमीद अभी भी लापता हैं और कर्नल फरीदी का मानना है कि लियोनार्ड ही उनके लापता होने में शामिल थे। यह और बात है कि उन्होंने अभी तक लियोनार्ड होने की बात स्वीकार नहीं की है। लेकिन खुफिया विभाग को पूरा यकीन है कि वह लियोनार्ड ही हैं क्योंकि वह काफी हद तक लियोनार्ड से मिलते-जुलते हैं। कुछ मामूली अंतर इस बात का सबूत नहीं हो सकते कि वह लियोनार्ड नहीं हैं, क्योंकि कोई भी व्यक्ति इतना मामूली अंतर पैदा कर सकता है।

मिसेज़ वार्नर की लड़की का अपहरण भी इसी कड़ी का एक हिस्सा लगता है। आखिर में बताया गया कि कर्नल फ़रीदी लियोनार्ड की गिरफ़्तारी के बावजूद अभी भी संतुष्ट नहीं हैं, बल्कि उन्हें कई ऐसी बातें परेशान कर रही हैं, जिनका ज़िक्र उन्होंने पत्रकारों से नहीं किया।

मिस्टर वार्नर के बारे में बात यह थी कि उन्होंने एक महत्वपूर्ण बात बताई थी । लियोनार्ड उनसेएक काम लेना चाहता था। उसने शहर की एक प्रतिष्ठित महिला (जिसका नाम जासूसी विभाग उजागर नहीं करना चाहता) को ब्लैकमेल करने का जाल बिछाया था। और वह उससे एक बड़ी रकम की माँग कर रहा था। कार्यक्रम के अनुसार, मिसेज़ वार्नर उस महिला से यह रकम वसूल कर लियोनार्ड को सौंप देंगी।

****

लेडी प्रकाश के होंठ सिकुड़े हुए थे और वह गुस्से से भरी नज़रों से फ़रीदी को घूर रही थी। फ़रीदी अपने ड्राइंग रूम में था और ऐसा लग रहा था जैसे उसने कुछ देर पहले गुस्से में कुछ कहा हो।

"आखिर, अब इसे स्वीकार करने में क्या हर्ज है?"

"कर्नल फ़रीदी, आप एक सम्मानित व्यक्ति हैं, अन्यथा आप मुझसे कुछ और सुनते।"

"मैंने जो कुछ भी सुनता , उसका मुझे कोई अफसोस नहीं होता ।"

"आप अजीब हैं। मुझे लगता है कि आप भी काफी व्यस्त आदमी होंगे।"

" मैं चाहता हूं कि मैं अपने सामने आपकी गलती स्वीकार किए बिना वापस न जाऊंगा ।"

"करनल फ़रीदी।" उसने फिर भौंहें चढ़ाईं। "मुझे अपने अफ़सरों से तुम्हारी शिकायत करने पर मजबूर मत करो।"

"अच्छा..." फरीदी ने गहरी साँस ली और कहा, "अगर लियोनार्ड ने खुद मुकदमे के दौरान यह कबूल कर लिया... तो फिर आपकी क्या स्थिति होगी?"

"देखेंगे।" उसने जल्दी से कहा। फिर उसने तुरंत अपने आप को संभाला और कहा, "वह क्या कबूल करेगा?"

उसने ऐसा क्यों कहना शुरू किया कि आप उसे जानती हैं , और वह तुम्हें ब्लैकमेल कर रहा था ?

"वो कहने ही क्यों लगा की जब की न मैं उसे जानती हूँ न ही वो मुझे "

इसने बावजूद भी वो वीएना में आपसे बड़ी रकम वसूल कर चुका है "

"करनल साहब! अभी जाइए। मेरे पास फ़ुर्सत नहीं है।"

"ठीक है, बात ख़त्म। क्या तुम्हारे पास ग्रामोफ़ोन है?"

"क्या ऊत पटाँग बकवास कर रहे हो?"

"अगर आपके पास कोई हो, तो मंगवाईए । मैं एक रिकॉर्ड सुनूँगा और वापस चला जाऊँगा। यह मेरी आखिरी गुज़ारिश है।"ओह, तुम मुझे ऐसे देख रही हो जैसे तुम्हें मेरी दिमागी हालत पर शक हो।"

"सच में, कर्नल! मुझे समझ नहीं आ रहा।" लेडी प्रकाश मुस्कुराई । लेकिन उस मुस्कान में झल्लाहट का भाव बहुत ज़्यादा था।

"मुझे निराश न कीजिए ," फ़रीदी ने गंभीरता से कहा।

महिला ने एक पल सोचा, फिर मेज़ पर लगी घंटी का बटन दबाया। अगले ही पल एक नौकर कमरे में दाखिल हुआ।

“ग्रामोफोन ले आओ ,” उसने उससे कहा।

ग्रामोफोन आने तक सन्नाटा छाया रहा। नौकर ने ग्रामोफोन लाकर मेज पर रख दिया। फ़रीदी ने अपने मेन्टल से एक रिकॉर्ड निकाला।

वो आश्चर्य से फ़रीदी को देख रही थी । नौकर जा चुका था । फ़रीदी ने ग्रामोफ़ोन पर रिकॉर्ड लगाकर उस महिला की ओर रुख किया।

375

हेलो.... लेडी प्रकाश..... ग्रामोफोन से किसी पुरुष की आवाज आती।

एक पुरुष की हँसी भरी आवाज़। ---टेम्स नदी की एक मछली।

देखो... मेरी विनती सुनो। महिला के स्वर में आशा थी। "मैं इतनी बड़ी रकम का प्रबंध नहीं कर सकती! कृपया दया करो।"

"काश मेरे सिर पर कोई अरबपति होता।" एक पुरुष की आवाज़।

ठीक है, पर मैं उनसे क्या कहूँगी? क्या बहाना बनाऊँगी? तीन लाख बहुत हैं।

"कोशिश तो करो... वरना अंजाम तो पता ही है।"

"मुझे सब पता है। खैर, अभी के लिए माफ़ कीजिए। मेरे यहाँ मेहमान आए हैं। मैं बाद में जवाब दूँगी । आपने जो अंत बताया है, वह मुझे पसंद नहीं आएगा।"

"ठीक है... लेकिन बहुत जल्द। मैं ज़्यादा इंतज़ार नहीं करूंगा ।"

फरीदी ने साउंड बॉक्स उठाया... उसके होठों पर एक शरारती मुस्कान थी... और लेडी सोफे पर ढीली पड़ी थी मानो उसे लग रहा था कि...वह कुछ समय बाद मर जायेगी.

"अब आपको क्या कहना हैं?" फ़रीदी ने पूछा.

महिला बस थूक निगल कर रह गई ।

"वह मर्दाना आवाज कैप्टन हमीद की थी," फरीदी ने लापरवाही से कहा।

देखिए करनल - लेडी प्रकाश, वाक्य पूरा करने के बजाय अपने माथे पर पसीने की बूंदों को साफ करने लगी ।

"मुझे तुम्हारी बदनामी पसंद नहीं," फ़रीदी ने धीरे से कहा। "मैं नहीं चाहता कि ऐसा हो, वरना तुम्हें इस रिकॉर्ड का अंजाम पता चल जाएगा... ज़ाहिर है...लियोनार्ड के मुकदमे के दौरान उसे अदालत में पेश किया जाएगा।

ओह कर्नल --

लेकिन नहीं! तुम्हारा अतीत चाहे जो भी रहा हो। लेकिन अब तुम एक सम्मानजनक जीवन जी रही हो। मैं कभी नहीं चाहूँगा कि तुम सर प्रकाश की नज़रों में अपमानित हो जाओ। अगर यह रिकॉर्ड अदालत में पेश किया गया, तो तुम्हें उन आपत्तिजनक तस्वीरों और पत्रों का ज़िक्र करने पर मजबूर होना पड़ेगा, जो लियोनार्ड के कब्जे में हैं और जिसके लिए वह तीन लाख मांग रहा है।"

"तो फिर आप क्या चाहते हो?"

"मेरी सहायता करो।"

मैंने लियोनार्ड को गिरफ़्तार कर लिया है, लेकिन वह यह नहीं मान रहा कि वह लियोनार्ड है। हालाँकि उसकी शक्ल लियोनार्ड से काफ़ी मिलती-जुलती है। वह कहता है कि यह समानता कोई ख़ास मायने नहीं रखती।कई लोग दूसरों से मिलते जुलते हैं।"

लेकिन तुम्हारे पास इसके और भी लक्षण होंगे--लेडी प्रकाश ने कहा "जैसे, फिंगर प्रिंटस । वह उन्हें कैसे नकार सकता है?"

"यही तो समस्या है," फ़रीदी ने कहा। "सब कुछ तो वहाँ था, उसका ब्रीफ़केस जो पहले से ही मौजूद था, लेकिन वह कार्यालय से गायब हो गया है ।"

"खैर... मैं आपकी किस प्रकार मदद कर सकती हूँ?"

"उसने तुम्हें पैसे लेकर कहां बुलाया और वह तुम्हें वहां कब ले गया?"

"मुझे कल रात जाना था... लेकिन वह जेल में है।"

" कहाँ जान था ?"

"कामताली के मैदान में।"

"तो आप कल ज़रूर जाइएगा ।"

"क्यों! अब वह जेल में है।"

"वह किसी को नहीं बताईएगा," फ़रीदी ने गोपनीयता से कहा। "वह आज रात जेल से भाग गया जाएगा.”

"मैं आपकी कोई भी बात समझ नहीं पा रही हूँ।"

"ओह...! मैं उसे फिर से रंगे हाथों पकड़ना चाहता हूँ।"

मैं समझ गई ।

समझ गई? फ़रीदी मुस्कुराने लगा।

****

अपाहिज लियोनार्ड

लेडी प्रकाश रात के एक बजे से दो बजे तक गाँव के सुनसान इलाके में लियोनार्ड का इंतज़ार करती रही, लेकिन वह नहीं आया। आखिरकार, थक-हारकर वह लौट आई। वह सारा पैसा भी अपने साथ ले आई जो साथ ले गई थी।

अगले दिन, उसने टेलीफोन पर उसी आदमी की डरावनी आवाज सुनी जो उसने पहले कई बार सुनी थी।

वह कह रहा था, "मैं वहाँ मौजूद था, लेडी प्रकाश ,लेकिन... तुम से नहीं मिला । क्या आप मुझे बता सकती हैं कि मेरी गिरफ़्तारी की ख़बर सुनने के बाद भी आप वहाँ क्यों आईं?"

"क्योंकि मैं लियोनार्ड को बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। एक बार, लंदन में एक ही समय में दस लियोनार्ड पैदा हुए थे। पुलिस ने उन सभी दसों को पकड़ लिया, लेकिन फिर भी वे लियोनार्ड तक नहीं पहुँच सके।"

"तुम बहुत समझदार हो। लेडी प्रकाश! चलो, तुम्हारी समझदारी के लिए मैं तुम्हें एक लाख माफ़ कर दूँगा। बस तुम्हें दो लाख लाने हैं।"

"धन्यवाद... लेकिन इस बार मुझे वे तस्वीरें और पत्र तुमहें वापस देने होंगे।"

"संतुष्ट रहो...यह हो जाएगा।"

मैं कैसे यकीन करूँ? पिछली बार तो तुमने मुझे वीएना में भी धोखा दिया था।

"मुझे उम्मीद है कि इस बार ऐसा नहीं होगा, लेडी प्रकाश। संतुष्ट रहो।"

"तो मुझे कब आना चाहिए?"

"परसों रात बारह बजे।"

"अच्छा मैं आ जाऊँगी ।"

दूसरी तरफ से लाइन कट गई थी।

लेडी प्रकाश ने कागज़ के एक छोटे से टुकड़े पर पेंसिल से लिखा, "परसों रात के बारह बजे।"

और उस टुकड़े को मुट्ठी में दबाए, वह इमारत के उस हिस्से में चली गईं जहाँ कबूतर रखे जाते थे। एक कबूतर को बाकी कबूतरों से अलग पिंजरे में रखा गया था। लेडी प्रकाश ने उसे बाहर निकाला और उसने अपने पैर में पहनी अंगूठी में लगी एक पिन से कागज़ के टुकड़े में छेद कर दिया। यह पत्र उसे फ़रीदी ने खुद दिया था ताकि वह उसे पूरी स्थिति से अवगत करा सके।

लेडी प्रकाश ने कबूतर को हवा में उछाला। कबूतर ऊँचा उठा, इमारत का चक्कर लगाया और फिर एक तरफ उड़ गया।

लेडी फरीदी के साथ पूरा सहयोग कर रही थी, क्योंकि फरीदी ने उस दिन न केवल उसके सामने वह रिकॉर्ड तोड़ा था, बल्कि यह भी वादा किया था कि लियोनार्ड के पास उसके लिए जो भी ब्लैकमेलिंग सामग्री है, उसे किसी को दिखाए बिना नष्ट कर दिया जाएगा।

****

रात अंधेरी थी... और कमताली का क्षेत्र अत्यंत डरावना लग रहा था,

लेकिन एक महिला उस भयावह वातावरण में लियोनार्ड जैसे खतरनाक, निडर और निर्भीक आदमी का इंतजार कर रही थी।

आसमान बादलों से ढका हुआ था और कभी भी बारिश हो सकती थी। लेडी बारह बजे से एक बजे तक इंतज़ार करती, लेकिन कोई नहीं आया। आखिरकार, उसे सोचना पड़ा कि लियोनार्ड बहुत दूरदर्शिता से काम ले रहा था। वह हर तरह से खुद को बचाना चाहता था। हो सकता था कि वह आज भी न आए।

लेकि पूरा मैदान वीरान था। अगर फरीदी फिर से लियोनार्ड को ढूँढ़ रहा है , तो कम से कम वह यहाँ तो होता।

महिला अपनी कार में बैठ गई। उस समय उसके पास सचमुच दो लाख के बड़े नोट थे। थोड़ी देर बाद उसे डर लगने लगा कि कहीं कोई उसे लूट न ले।

महिला ने बिना किसी हिचकिचाहट के कार स्टार्ट की और उसे तेज गति से सड़क पर ले आईं।

सड़क सुनसान थी। वह तेज़ी से गाड़ी चला रही थी। अचानक उसने देखा कि एक और कार भी ठीक उसी रास्ते से आ रही है। उस को देखकर महिला के हाथ-पाँव फूल गए।

लेडी प्रकाश . ---कार के दूसरी तरफ से आवाज़ आई। बोलने वाला अंग्रेज लग रहा था और उसने उससे अंग्रेजी में ही बात की।

हाँ, मैं हूँ। ----वो सहमी हुयी आवाज़ में बोली ।

गाड़ी रोको---। मैं संतुष्ट हूँ। दूसरी तरफ से आवाज़ आई।

लेडी प्रकाश ने अपनी गाड़ी की गति धीमी कर दी।

अंदर की लाइट जलाओ। ---दूसरी कार से आवाज़ आई।

लेडी प्रकाश ने अपनी कार की लाइट जलाई, ब्रेक लगाए और इंजन बंद कर दिया। दूसरी कार भी रुक गई और उसमें से एक आदमी उतरा।

"रकम कहाँ है ?" उसने पूछा.

लेडी प्रकाश ने पिछली सीट पर पड़े चमड़े के बैग की ओर इशारा किया।

वह उसे उठाने के लिए आगे बढ़ा।

रुको।-- लेडी प्रकाश ने उससे कहा -- , " पहले मेरा मेरा सामान मुझे दे दो।"

लेकिन वह पिछली सीट से बैग उठा चुका था।

उसने उसे अपनी कार में बिठाते हुए कहा, "ओह, लेडी प्रकाश! मेरे पास सब कुछ सुरक्षित है।"

379

"जल्दी क्या है? मैं यहाँ बहुत दिनों तक रहूँगा।"

"और तुम मुझे ब्लैकमेल करना जारी रखोगे।"

" न न बिल्कुल भी नहीं , बुरा मत मानना, लेडी प्रकाश। आप बहुत ही इज्जतदार महिला हैं। मुझे आपको चोट पहुँचाने के लिए मजबूर होना पड़ा। अब मैं आपका दोस्त हूँ। भविष्य में हम दोस्त की तरह मिलेंगे और आप मुझे उच्च वर्ग से मिलवाएँगी।"

मैं समझ गई। --लेडी प्रकाश ने गहरी साँस ली और कहा, "इसका मतलब है कि तुम मुझे दूसरों का शिकार करने के लिए चारे की तरह इस्तेमाल करोगे और मैं तुम्हारा हथियार बनकर रह जाऊँगी।"

"आप बहुत बुद्धिमान हैं। मैं आपकी कुशलता की कामना करता हूँ, लेडी प्रकाश ! शुभ रात्रि... मैं आपसे बहुत जल्द आपके घर पर एक सम्मानित व्यक्ति के रूप में मिलूँगा।"

"ठहरों प्यारे -- ..." पास से एक तेज़ फुसफुसाहट सुनाई दी और लियोनार्ड अनायास ही चौंक पड़ा। लेडी प्रकाश की कार की स्टेपनी के पास एक आदमी खड़ा था। लेकिन अँधेरे की वजह से उसकी पहचान नहीं हो पाई।

मेरे हाथ में रिवॉल्वर है... लियूनी डार्लिंग।" नवागंतुक ने कहा। "और यह आपकी ओर तान दी गई है। अपने हाथ ऊपर करो।"

लेडी प्रकाश ने फरीदी की आवाज साफ पहचान ली और उनका दिल तेजी से धड़कने लगा।

लियोनार्ड पागलों की तरह फरीदी पर कूद पड़ा।

फरीदी तेज़ी से पीछे हटा, और लियोनार्ड मुँह के बल गिर पड़ा। फरीदी आगे बढ़ा और अपना एक पैर लियोनार्ड की पीठ पर रख दिया।

"तुम शारीरिक रूप से ज़्यादा मज़बूत नहीं हो, लियोनार्ड!" फरीदी ने शांत स्वर में कहा। लेकिन अगले ही पल उसे अपनी बात पर शर्म आ गई। क्योंकि उसका पैर अब लियोनार्ड की पकड़ में था और वह खुद ज़मीन पर था।

लियोनार्ड पागल कुत्ते की तरह फरीदी पर झपट रहा था। अचानक, फरीदी ने उसकी गर्दन पकड़ ली और उसी समय, एक घूँसा उसकी नाक पर पड़ा, जिससे वह बेहोश हो गया।

तभी लेडी प्रकाश ने एक दिल दहला देने वाला दृश्य देखा। वह हाथ में टॉर्च पकड़े उन दोनों पर रोशनी डाल रही थी।

"लियोनार्ड..." फरीदी उसकी टाँग मरोड़ते हुए कह रहा था। "अब तुम जेल से भी नहीं भाग पाओगे।"

लियोनार्ड की चीख दूर तक गूँजी। फिर एक और चीख... और फिर वह बेहोश हो गया।

फ़रीदी ने उसके दोनों पैर टखनों से तोड़ दिये थे।

"लेडी प्रकाश..." फ़रीदी सीधा खड़ा हो गया और बोला, "मैं तुम्हारा आभारी हूँ।"

"क्या तुमने उसकी टाँगें तोड़ दीं?"

हाँ, लेडी प्रकाश और वो ज़िंदगी भर अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो पाएगा । मैं अपने दुश्मनों को नहीं मारता। ऐसा करने से बदला लेने का मज़ा खत्म हो जाता है।
"बदला ? क्या उसने पिछले दिनों तुम पर हमला किया था।"

"हाँ! और कौन ऐसा करेगा? उसकी गाड़ी से अपना बैग ले लो। शुभ रात्रि। तुम्हारा सामान मिलते ही तुम्हें पहुँचा दिया जाएगा। निश्चिंत रहो। किसी को भनक तक नहीं लगेगी। शुभ रात्रि।"

लेडी प्रकाश ने लियोनार्ड की कार से बैग उठाया और कुछ क्षण फरीदी को देखती रहीं, फिर अपनी कार में बैठ गईं और बोलीं, "मैं मरते दम तक आपकी आभारी रहूंगी।"

"इसकी कोई ज़रूरत नहीं है, लेडी प्रकाश ...! फ़रीदी ने धीरे से कहा। लेडी प्रकाश की कार तेज़ रफ़्तार पकड़ती हुई अँधेरे में गायब हो गई।

****

"यार, क्या तमाशा मचा रखा है तुमने। डी. आई. जी. फ़रीदी पीआर झल्ला गए।

आप कितने लियोनार्ड पकड़ेंगे?

उसे बिस्तर से उठकर आना पड़ा। सुबह के तीन बज रहे थे। --" अब मैं एक भी नहीं पकड़ पाऊँगा। सर, यह आखिरी था।"

"ये क्या है! एक को जेल में डाल दिया और अब दूसरे को। जब तुम्हें यकीन ही नहीं था, तो मिस्टर बर्न को बिना मतलब के बेइज़्ज़त क्यों किया? तुम्हें पता है नतीजा क्या होगा। वो विभाग पर केस कर देगा। हमारे ख़िलाफ़ कूटनीतिक कार्रवाई होगी।"

"अगर बर्न ने वो करने की हिम्मत की तो मैं उसकी हड्डियाँ तोड़ दूँगा।" फ़रीदी ने गंभीरता से कहा। और डी.आई.जी. हथे से उखड़ कर रह गए।

"फालतू बातचीत से परहेज किया करो ।"

"मैं सही बोल रहा हूँ।" फ़रीदी मुस्कुराया। "बेचारा हमीद हर हाल में बेचारा ही है, उसे जैसे चाहो इस्तेमाल करिये।"

आपका क्या मतलब है...!"

"बार्न असल में आपका पुराना नौकर हमीद है। कुछ दिनों तक मैंने बार्न का रोल भी किया था और उस ख़ास मौके पर बार्न का मेकअप हमीद से करवाया था।"

"कुछ समझ में नहीं आया।"

"मैं शुरू से ही बताऊंगा ," फरीदी ने कहा और अपनी जेबों में हाथ डाला।

ओह... , एक सिगार लो...! डीआईजी ने चिंतित स्वर में कहा। "तुम्हें इजाज़त है। तुम मेरे सामने सिगार पी सकते हो। मैंने तुम्हें बहुत पहले ही बता दिया था और अपनी बात जारी रखो।"

शुक्रिया। मैंने आठ घंटे से सिगार नहीं पिया है। फरीदी ने सिगार जलाते हुए कहा। उसने दो-तीन कश लिए और फिर कहा, " "मुझे समझ नहीं आ रहा कि इस कहानी की शुरुआत कहाँ से करूँ। अगर मैंने इतना पेचीदा रास्ता न अपनाया होता, तो लियोनार्ड तक पहुँचना नामुमकिन होता। लेकिन अब वह चूहेदानी में फंसे चूहे की तरह फँस चुका है। खैर, यह कहानी लियोनार्ड के ब्रीफ़केस से शुरू होती है। मुझे यकीन है कि रिकॉर्ड स्टोर से गायब करने के बाद उसने मुझ पर हमला करना शुरू कर दिया था। ब्रीफ़केस गायब करने का मकसद सिर्फ़ इतना था कि लियोनार्ड अपने उन एजेंटों से संपर्क कर सके जिनसे मैं संपर्क नहीं कर पाया था। ज़ाहिर है, मैंने अपनी रिपोर्ट में उन एजेंटों का ज़िक्र किया था जिन्हें मैं जानता था और रिपोर्ट ब्रीफ़केस में सुरक्षित रखी थी, लेकिन दो-तीन नाम ऐसे थे जिनका ज़िक्र करना मैं भूल गया था। लियोनार्ड इस बार उन लोगों के साथ काम कर रहा था। कुल मिलाकर तीन लोग थे। उनमें से एक इसी होटल में मारा गया था और बाकी दो को सार्जेंट रमेश ने अब तक गिरफ्तार कर लिया होगा। लियोनार्ड के इर्द-गिर्द अपना जाल मज़बूत करने के लिए मुझे काफ़ी मशक्कत करनी पड़ी। मैंने उसके एजेंट को मार डाला। उसने अपनी गर्लफ्रेंड ग्लोरिया के फ़्लैट से मुझे गोली मारी थी और ग्लोरिया ने उसकी अजीबोगरीब उंगलियों की वजह से उसे पहचान लिया था। लियोनार्ड को ज़रूर पता चल गया होगा और उसने उसे मार डाला होगा। क्योंकि वहाँ एक और एजेंट था। लियोनार्ड उस होटल के कमरे में ठहरा हुआ था जहाँ उसका शव मिला था और मुझे शक था कि उसे लियोनार्ड के ठिकाने के बारे में पता था। इसलिए मैं उस पर कड़ी नज़र रख रहा था। दूसरी ओर, एक और योजना थी। योजना एक और लियोनार्ड बनाने की थी जो लेडी प्रकाश से पैसे ऐंठने की कोशिश करेगा। इसके लिए मैंने जानबूझकर लियोनार्ड की एक एजेंट को चुना, एक महिला जिसका ज़िक्र मैंने अपनी रिपोर्ट में पहले ही कर दिया था। मिसेज़ वार्नर... और फिर मेरी उनसे बहुत ही नाटकीय अंदाज़ में मुलाक़ात हुई। मैं बार्न के वेश में था। यानी,

मैंने लगभग खुद को लियोनार्ड जैसा बना लिया था। फिर मैंने श्रीमती वार्नर को यकीन दिलाया कि मैं लियोनार्ड हूँ।"

फरीदी ने बताया कि किस तरह से उसने मिसेज वार्नर से परिचय अपना कराया था और डी.आई.जी. मुस्कुराये बिना नहीं रह सके।

फ़रीदी ने आगे कहा, "दरअसल मैं उस दिन दो अलग-अलग जाल बिछाना चाहता था। एक तो मिस्टर बार्न बनाकर मिसेव्ज वार्नर से जान-पहचान बढ़ाना था और दूसरा... वो ज़्यादा दिलचस्प है। लेकिन ब्रेकअप के बाद हमीद का मूड इतना बिगड़ गया था कि उसने मेरे बताए दूसरे काम को तुरंत नहीं किया। वरना लियोनार्ड उस रात पकड़ा जाता। मैं पहले ही बता चुका हूँ कि मुझे शक था कि होटल एजेंट को लियोनार्ड का ठिकाना पता था। दूसरा तरीका जो मैं अपनाना चाहता था, वो ये था कि अगर हमीद उस रात उस पर अमल करता, तो एजेंट लियोनार्ड के पास जाने के लिए मजबूर हो जाता और मैं उसका पीछा करते हुए लियोनार्ड तक पहुँच जाता।" कुछ पलों की खामोशी के बाद, फरीदी ने मेंढक के पिंजरे के बारे में जो मज़ाक किया था , उसके बारे में बताया , ये एक लापरवाही से भरा काम था और कृत्य का उद्देश्य था उस तक पहुंचाना ही था ... डीआईजी बोला।

"लेकिन इस हरकत का मतलब ?

"मैं आमतौर पर ऐसे ही लापरवाही से काम करता हूँ।" फ़रीदी का स्वर थोड़ा अप्रिय हो गया, लेकिन उसने तुरंत अपना संयम वापस पा लिया और हँसते हुए कहा। "उस जगह का मालिक साफ़-सफ़ाई का बहुत बड़ा शौकीन है और मेज़ पर कोहनियाँ इस तरह टिकाकर बैठता है कि कभी-कभी दूर से देखने पर एक बड़ा सा मेंढक नज़र आता है। लियोनार्ड के एजेंट ने उसे मेंढक और चिड़िया कहा था। एक बार तो दोनों में इसी बात पर झगड़ा भी हुआ था। यह सब देखकर मैंने योजना बनाई थी। खैर, मेंढक वाले सीन के साथ हंगामा हुआ और मैंने लियोनार्ड के एजेंट को फ़ोन किया... लेकिन कोई जवाब नहीं आया। योजना यह थी कि मैं उसे शोरगुल की सूचना दूँगा और कहूँगा कि शहज़ाद चाकू लेकर उसके कमरे की तरफ़ आ रहा है। उसे शक है कि वह पिंजरे में मेंढक वही लेकर आया है। मैं उसे यह भी बताऊँगा कि मैं भी उसी होटल का किरायेदार हूँ और नहीं चाहता कि उसे कोई नुकसान पहुँचे। फिर, वह जिस भी रास्ते से भागेगा, वह ज़रूर... उसका सामना हमीद से होगा। वैसे, बेचारा हमीद अभी तक समझ नहीं

पाया था कि मेंढक वाले की इस हरकत का मकसद क्या था और... लेकिन वह योजना नाकाम रही। मुझे लगता है कि वह हमीद को वहां देखकर वह सोचने पर मजबूर हो गया कि उसने यह कदम उठाया होगा, और फिर गुस्से में आकर उसने लियोनार्ड को फोन किया होगा।

"मैं उनके निवास पर गया होता,

'लेकिन लियोनार्ड के रूप में प्रस्तुत होने का क्या जरूरत थी ?"' डी.आई.जी. ने पूछा।

मकसद बस लियोनार्ड को मानसिक रूप से परेशान करना था... मैंने मिसेज वार्नर के ज़रिए कुछ ब्लैकमेलिंग भी की है और मिसेज़ वार्नर मेरे कहने पर लेडी प्रकाश के इर्द-गिर्द मंडराती रही हैं। लियोनार्ड होने के नाते, मैंने शहर के कुछ सबसे भ्रष्ट लोगों से भी संपर्क स्थापित कर लिया था। नतीजा ये हुआ कि लियोनार्ड के दोनों एजेंट मेरे घेरे में आने लगे। और कुछ दिनों के लिए लियोनार्ड का ध्यान फरीदी से हट गया और फिर उसके एजेंटों ने भी कई बार फरीदी को नकली लियोनार्ड के बंगले के आस-पास मंडराते देखा और फिर एक दिन उन्होंने ये भी देखा कि नकली लियोनार्ड या बार्न (फरीदी) ने एक दिन अपने भ्रष्ट लोगों की मदद से कैप्टन हमीद और वार्नर की लड़की का अपहरण कर लिया था और लियोनार्ड को ये भी पता चला कि मिसेज वार्नर ने उसी लड़की के अपहरण के आरोप में हमीद के ख़िलाफ़ रिपोर्ट दर्ज करा दी है। लियोनार्ड के होश उड़ गए। उसने अपना ध्यान मुझसे पूरी तरह हटा लिया और अपना सारा समय बार्न के पीछे लगाने लगा। उसे डर था कि कहीं वो नकली लियोनार्ड (बार्न- फरीदी) लेडी प्रकाश वाले पैसे पीआर न हाथ साफ कर दे ।

फिर जब मैंने हमीद को बंदी बनाकर जेल भिजवाया, तो लियोनार्ड को एक ख़ास तसल्ली हुई और उसने मुझसे पहले निपटने की बजाय, लेडी प्रकाश से जल्द से जल्द पैसे वसूल करना

बेहतर समझा... और फिर, साहब, आपका यह नौकर दो बार मौत के मुँह से बच गया।"
फरीदीचुप हो गया।

वह मुस्कुराने लगा.

क्यों? कैसे? डीआईजी को हैरानी हुई।

अगर कोई इंसान कार दो-तीन घंटे कार कि डिकी स्टेपनी में बंद रहे , तो सही अंदाज़ा लगाया जा सकता है ।

मैंने दो रातों से यही किया है... लेडी प्रकाश की गाड़ी में चुपके से घुसना और वो भी इस तरह कि लेडी प्रकाश को पता न चले। वो लियोनार्ड को जो पैसे चाहिए थे, वो लेकर कामतली के खेत में गई थी। पहली रात लियोनार्ड की हिम्मत नहीं हुई कि वो उसके पास जाए और उसे वापस लौटना पड़ा। लियोनार्ड देख रहा होगा कि पुलिस भी कामतली के खेत में दिलचस्पी नहीं ले रही है... और रात में, जब वो आराम से बैठ गया, तो उसकी मुलाक़ात लेडी प्रकाश से हुई। लेकिन उसकी मौत लेडी प्रकाश के साथ ही जा रही थी। मैं लेडी प्रकाश की गाड़ी से उतरा और लियोनार्ड पर हमला कर दिया... बस यही पूरी कहानी है।

और इस बार भी तुमने सब कुछ अकेले ही करने की कोशिश की।”

मजबूरी थी, साहब। कार की पिछली डिकी इतनी बड़ी नहीं होती कि एक साथ दो लोग बैठ सकें... और आप तो जानते ही हैं कि ज़्यादा भीड़भाड़ का क्या नतीजा होता है। पुलिस की मदद से तो मैं ये काम लाख बरस में भी नहीं कर पाता।

और मैं उसे गिरफ़्तार भी नहीं कर सकता।"

फ़रीदी चुप हो गया... अचानक एक सरकारी डॉक्टर कमरे में दाखिल हुआ।

"उसके दोनों पैर शायद हमेशा के लिए बेकार हो गए हैं और इस तरह से लटक गए हैं कि बैठना लगभग असंभव है। वह शायद कभी अपने पैरों पर खड़ा न हो पाए,"

फ़रीदी ने मुस्कुराते हुए कहा।

"अब लियोनार्ड खुद अदालत में फाँसी की मांग करेगा। हो सकता है कि उसे दो या पाँच साल जीना पसंद न हो।"

फ़रीदी चुप हो गया और ज़मीन की तरफ़ देखने लगा। डी.आई.जी. ने उसे अजीब नज़रों से देखा और न जाने क्यों, वह अपने आप काँप कर रह गया ।

खत्म

sjeet